Useful For Prelims

Date: 14-Nov-2025

देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की आज 136वीं जयंती है। आजादी की रात अपने ऐतिहासिक संबोधन 'नियति से मिलन' में जिस भारत का सपना उन्होंने देश को दिखाया था, क्या वह उस पर खरे उतर सके? आखिर क्यों आज भी कभी सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली लूंग को वह याद आते हैं, तो कभी न्यूयॉर्क के मेयर ममदानी उनका जिक्र करते हैं। पंडित नेहरू के व्यक्तित्व और योगदान को देखने के दो झरोखे :

आमने-सामने

नेहरू ने आजाद भारत का नया मन बनाया

यहां स्कैन करें

कुमार प्रशांत | वरिष्ठ पत्रकार

- भयंकर रक्त-स्नान कर आजाद हुए भारत में वह आशा का संचार कर सके।
- उन्होंने संसदीय लोकतंत्र और आर्थिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित की।
- उनकी ही देन है कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत किसी का पिछलग्गू नहीं बना।

हिंद के जवाहर बने रहो। यह वाक्य मेरा नहीं है, महात्मा गांधी का है! इस पंक्ति से पहले उन्होंने यह भी लिखा था, 'उपवास छोड़ो... बहुत वर्ष जिओ और हिंद के जवाहर बने रहो!' यह तब लिखा था, जब सांप्रदायिक दंगों की आग में धधकती दिल्ली में कोई 80 साल के गांधी ने 18 जनवरी, 1948 को अपने जीवन का अंतिम उपवास खत्म किया था। इसके 12 दिनों बाद उनकी हत्या कर दी गई। कुल जमा छह दिनों का वह उपवास उन्हें निचोड़ गया था, क्योंकि उनमें जीवन तो बहुत बचा था; जीवन-शक्ति छीजती जा रही थी। जवाहरलाल ने न किसी को बताया था, न किसी को मालूम हुआ कि गांधी का उपवास शुरू होते ही प्रधानमंत्री नेहरू ने भी उपवास रख लिया था। लेकिन गांधी को इसकी खबर लगी थी, इसलिए अपना उपवास छोड़ते ही उन्होंने इस दूसरे उपवासी की सुध ली।

आज उसी जवाहरलाल की 136वीं जयंती है। मतलब, वह होते, तो 136 साल के होते। नहीं हैं, तो हम 136 किस्म की विपदाओं से घिरे हैं, घिरते जा रहे हैं। लेकिन उसी जवाहरलाल का खम है कि हम आज भी इस विपदा से निकलने का मानवीय रास्ता खोजने में लगे हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गांधी की दोनों बातें मान लीं- 75 साल की लंबी जिंदगी जी और जब तक रहे हिंद के जवाहर बने रहे। सहमतियां-असहमतियां सब अपनी जगह हैं, रहेंगी; लेकिन साबित दिमाग व शुद्ध मन का हर व्यक्ति यह तो कहेगा ही कि उन जैसी दीवानगी से अपने देश को प्यार करने वाला और बदले में देश से वैसा ही प्यार पाने वाला दूसरा व्यक्ति खोजना कठिन है।

यह प्यार उन्हें सत्ता की कुर्सी की बदौलत नहीं मिला था। यह मिला था वर्षों लंबी जेल काटने के प्रतिदान में; यह मिला था उन लंबे सालों की जद्दोजहद के प्रतिदान में, जब वह अपना घर-परिवार सब छिन्न-भिन्न कर, देश-दुनिया में आजादी का अलख जगाते फिरे थे। फिर तो ऐसा हुआ कि वह देश के प्रधानमंत्री बनें, यह चुनाव गांधी ने ही नहीं, भगत सिंह ने भी किया। पंडित नेहरू बड़े इसलिए नहीं थे कि किसी बड़ी कुर्सी पर बैठे थे। वह बड़े थे, इसलिए उन्हें बड़ी कुर्सी मिली थी। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने युवा जवाहरलाल के साथ कुछ दिन किसान आंदोलन में बिताने के बाद लिखा था, मोतीलाल का यह राजकुमार गंदे संडास को इतनी सहजता से लेगा व जमीन पर जैसे-तैसे सोने में गुरेज नहीं करेगा, यह तो मेरी कल्पना में भी नहीं था। यही प्रभुदत्त ब्रह्मचारी थे, जिन्होंने संघ परिवार के उकसावे पर जवाहरलाल नेहरू के विरुद्ध चुनाव लड़ा और हार गए थे। मगर अपने इस प्रशंसक प्रतिपक्षी के बारे में जवाहरलाल का कोई हल्का कथन आप खोज नहीं सकेंगे।

जवाहरलाल ने आजाद भारत को बनाने-संवारने का काम गहरी शिद्दत से किया। वह मात्र प्रधानमंत्री होते, तो शायद यह संभव नहीं होता; वह कुर्सी से बड़े आदमी थे। इसलिए वह जानते थे कि देश को बनाने का मतलब होता है देश का मन नया बनाना। सड़कें-कारखाने-स्कूल-कॉलेज-विश्वविद्यालय-ज्ञान-विज्ञान के संस्थानों से लेकर संसद- विधानसभाएं-न्यायपालिका-प्रेस आदि क्या नहीं था, जो जवाहरलाल की पहल व निर्देश से नहीं बना, लेकिन वह सावधान थे- अत्यंत सावधान- कि इन सबमें जो बनना है, वह भारत का नया मन बनना है, नया मन? मतलब क्या? नया मन वह है, जो हर तरह की संकीर्णताओं से ऊपर उठने की कोशिश करता है। पुराना मन अनगिनत संकीर्णताओं में बद्ध होता है, जाने-अनजाने। धर्म की, जाति की, प्रांत-भाषा-लिंग की संकीर्णताओं में घिरा मन कैसे समझे कि आप जैसे ही आजाद हुए, आपने जैसे ही लोकतंत्र स्वीकार किया, जीवन के व जीने के आधार बदल जाते हैं?

पंडित नेहरू किसी राजनीतिक संयोग से प्रधानमंत्री होते, जिसकी प्रतिबद्धता अपनी कुर्सी तक सीमित होती, तो उनके लिए यह लड़ाई अपेक्षाकृत आसान होती। मगर उनकी प्रतिबद्धता गांधी के कारखाने में गढ़ी व ढाली गई थी, इसलिए यह लड़ाई उनके लिए नए भारत का नया मन बनाने की प्रतिबद्धता से जुड़ गई थी।

जवाहरलाल इतिहास की गहरी समझ रखने वाले, उत्साह व ऊर्जा से भरपूर मोहक व्यक्तित्व के धनी थे। कविगुरु रवींद्रनाथ ने उन्हें 'ऋतुराज' या गांधी ने 'हिंद का जवाहर' वैसे ही तो नहीं कहा। वह सच में ऐसे ही थे। भयंकर रक्त-स्नान कर आजाद हुए डगमगाते भारत में वह आशा का संचार कर सके, इसका भौगोलिक ढांचा स्थिर और मजबूत कर सके, इसके भूत-वर्तमान व भविष्य का मोहक व चुनौतीपूर्ण नक्शा खींच सके और देश के सभी धर्मों-जातियों-भाषाओं-संस्कृतियों से इन सबकी स्वीकृति ले सके, तो इसके पीछे की उनकी प्रतिबद्धता, उत्कटता, गहरा आत्मविश्वास तथा अथक मेहनत को पहचानना कठिन नहीं है। उन्होंने आजाद भारत के लिए दो सबसे महत्वपूर्ण तत्व को पहचाना- संसदीय लोकतंत्र की नींव मजबूत करना तथा इसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करना। वह हमें जो भारत सौंप गए, वह इन दोनों कसौटियों पर पहले से ज्यादा सशक्त था, इससे कौन इनकार कर सकता है?

जवाहरलाल को देखने की एक खिड़की और भी है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत किसी का पिछलग्गू नहीं बना, बल्कि उसने तटस्थ राष्ट्रों का एक नया मंच बना दिया। यह जवाहरलाल के बगैर संभव नहीं था। हम जाने को पाकिस्तान के रास्ते भी जा सकते थे; हम जाने को तटस्थ राष्ट्रों के उन प्रमुख राष्ट्राध्यक्षों के रास्ते भी जा सकते थे, जो चले तो जवाहरलाल के साथ ही थे, लेकिन जल्दी ही इस या उस कारण से एकाधिकारशाही के रास्ते अपने देश के तानाशाह बन बैठे। फिर चाहे वह मिस्र के नासिर हों, घाना के एंक्रूमा, इंडोनेशिया के सुकार्णो हों या यूगोस्लाविया के मार्शल टीटो। जवाहरलाल को जैसा रक्त-रंजित देश मिला था, उसमें इसका टूट जाना, सांप्रदायिकता की आग में झुलसते रहना, लोकतंत्र का चोला उतार फेंकना व अंग्रेजी में जिसे 'बनाना स्टेट' कहते हैं, वैसा भारत बन जाना संभव था। लेकिन यह सब नहीं हुआ, क्योंकि जवाहरलाल हमारे साथ थे, हमारे बीच थे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

कुछ कमियां भी छोड़ गए प्रथम प्रधानमंत्री

यहां स्कैन करें

राकेश सिन्हा | प्रोफेसर व पूर्व भाजपा सांसद

- नेहरू की सबसे बड़ी भूल थी कि वह पश्चिम के आईने में भारत को देखते थे।
- जैसा वह सभाओं में दिखते, वैसा ही वह सरकार में नहीं होते।
- यूरोप के 'रिलीजन' और भारत के धर्म का अंतर वह स्थापित नहीं कर सके।

भारत के राजनीतिक विमर्श का हिस्सा जवाहरलाल नेहरू अपने जीवन-काल में कम, और मृत्योपरांत अधिक रहे। वह अनेक अवसरों पर संदर्भ बिंदु बन जाते हैं। इसका कारण उनका विशिष्ट राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण है। उनके दर्शन के आधार पर हमारा देश स्वतंत्रता के बाद दशकों तक परिभाषित होता रहा, जिसे भारत की पहचान या विचार (आइडिया ऑफ इंडिया) कहते हैं। उस नेहरूवाद को कांग्रेस या उसके समानधर्मी दलों ने अपना बुनियाद बना लिया। यही कारण है कि 2014 में सत्ता-परिवर्तन के बाद नेहरूवाद पर बहस तेज हो गई। इसका कारण था- जिस विचार और राजनीतिक ताकत को नेहरू उपेक्षा की नजर से देखते थे, वही उभरकर देश में नेहरूवाद का विकल्प बन गया।

नेहरू की सबसे बड़ी भूल थी कि वह पश्चिम के आईने में भारत को देखते थे। यही कारण है कि वह भारतीय संस्कृति की उन्हीं बातों को वैधानिकता और समर्थन देते रहे, जिसको यूरोप पसंद करता था। वह एक प्रभावी और लोकप्रिय राजनेता थे। उनके पास राजनीतिक एवं नैतिक, दोनों ताकतें थी, जिससे वह भारत की अलग पहचान इसके इतिहास, संस्कृति, दर्शन और ज्ञान परंपरा के आधार पर स्थापित कर सकते थे। किंतु, उन्होंने इसके विपरीत किया। पंथनिरपेक्षता पर जो औपनिवेशिक सोच थी, उसके वह पालक बन गए। यूरोप के 'रिलीजन' और भारत के धर्म का अंतर वह स्थापित नहीं कर सके। और यही भविष्य की समस्याओं का बीज बन गया। तभी तो सोमनाथ में मंदिर के जीर्णोद्धार के प्रश्न पर उनके अपने ही मंत्रिमंडल के लोग सरदार पटेल, केएम मुंशी, एनवी गाडगिल उनकी राय से असहमत थे। नेहरू इसे सांप्रदायिक मानते थे। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद 11 मई, 1951 को जब सोमनाथ प्राण-प्रतिष्ठा के लिए गए, तब नेहरू ने उनका विरोध किया।

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में संस्कृति की अहम भूमिका होती है। उसे दबाकर या नजरंदाज कर राष्ट्र की एकता व अखंडता की बुनियाद को मजबूत करना कठिन होता है। यद्यपि नेहरू स्वयं इसकी अनुभूति करते थे, पर पश्चिमी सोच की विवशता से वह हमेशा द्वंद्व में रहते थे। 24 जनवरी, 1948 को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उन्होंने उपस्थित मुस्लिम श्रोताओं से पूछा था कि भारत की विरासत की चीजें उन्हें आकर्षित करती हैं या उसे वे अपने से अलग मानते हैं?

यह भाषण अपवाद बन गया। हिंदू कोड बिल पर जब बहस हो रही थी, तब सोशलिस्ट आचार्य जेबी कृपलानी ने पूछा था कि 'एक समुदाय को क्यों छोड़ा जा रहा है?' फिर कटाक्ष किया, 'हिंदू महासभा ही नहीं, भारतीय राज्य भी सांप्रदायिक है।' जिन कारणों से सदियों साथ रहने के बावजूद लोग बंट गए, उन कारणों को निरस्त करने के लिए वैचारिक साक्षरता की जरूरत थी। ऐसा करने की जगह नेहरू राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को कठघरे में खड़ाकर सेकुलरिज्म की परिभाषा गढ़ने लगे। इतिहास ने उन्हें एक महान अवसर और बड़ी समस्या के समाधान के लिए दिया, परंतु उसके साथ उन्होंने बड़प्पन नही दिखाई।

भारत 1947 में गुलामी से मुक्त हुआ था, परंतु गुलामी की मानसिकता बनी हुई थी। भारतीय राज्य आर्थिक-राजनीतिक धाराओं के साथ वैचारिक दायित्व का भी निर्वाह करता है। नेहरू ऐसा करने में झिझक गए। दिल्ली में ब्रिटेन के राजा-रानियों की प्रतिमाएं बनी रहीं, जो शोषण, दमन और हजारों लोगों के बलिदान के लिए जिम्मेदार थे। भारत का उदय सिर्फ राजनीतिक नहीं, सांस्कृतिक भी है। सांप्रदायिक विवादों एवं जातीय संघर्षों में सतत रहकर यह अपनी वैश्विक भूमिका की सक्षमता को कम कर लेता है। मोदी काल में औपनिवेशिक विमुक्तिकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। फलस्वरूप नेहरू पर विवाद उठना स्वाभाविक है।

भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात लोकतंत्र को पूर्णता में अपनाया। यह इसकी बड़ी उपलब्धि है। किंतु लोकतंत्र तभी सार्थक रूप से प्रवाहमान होता है, जब दलों में आंतरिक लोकतंत्र हो। नेहरू कांग्रेस के भीतर लगातार अपने वर्चस्व को बनाने में लगे रहे। दलों के भीतर दृष्टिकोणों का अंतर होना और उसके प्रति परस्पर सहिष्णुता एवं सह-अस्तित्व का भाव रखना आंतरिक लोकतंत्र का अनिवार्य तत्व होता है। परंतु कांग्रेस, जो स्वतंत्रता से पूर्व वैचारिक बहुलता के लिए जानी जाती थी, वह उसे नेहरू के प्रभाव में त्यागने लगी। उदाहरण के लिए, पुरुषोत्तम दास टंडन का शरणार्थियों के सम्मेलन में जाना नेहरू को पसंद नहीं आया। बात यहीं तक नहीं रुकी। साल 1950 में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के उम्मीदवार के रूप में टंडन ने नेहरू समर्थित प्रत्याशी कृपलानी को पराजित किया। नेहरू इस लोकतांत्रिक निर्णय से असहज थे। उन्होंने असहयोग का रास्ता अख्तियार किया। परिणामस्वरूप, टंडन को अध्यक्ष पड़ छोड़ना पड़ा।

नेहरू ने यह 1939 के प्रयोग से सीखा था। तब लोकतांत्रिक रूप से चुने गए सुभाष चंद्र बोस को कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा था। उन्होंने महात्मा गांधी समर्थित पट्टाभि सीतारमैया को हराया था। नेहरू सूक्ष्म वैचारिक अंतर को भी पचा नहीं पाते थे। जैसा वह सभाओं में दिखते थे, वैसा वह सरकार में नहीं होते थे। यही कारण है कि सीडी देशमुख एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी को उनके मंत्रिमंडल से इस्तीफा देना पड़ा था।

स्वतंत्रता संग्राम ने देश में राजनीतिक कार्यकर्ताओं की फौज तैयार की थी। त्याग, तपस्या अहिंसा और राष्ट्रभक्ति उसके आयाम थे। नेहरू के पास यह बड़ी पूंजी थी। वह स्वतंत्रता सेनानियों का उपयोग सामाजिक बदलाव के लिए कर सकते थे। उनमें सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण का सारथी बनने की असीम क्षमता थी, पर वह स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक बेरोजगार और अनुपयोगी आदर्शवाद के प्रतीक बनकर रह गए।

नेहरू ने प्रतिकूल परिस्थितियों में शिक्षा, उद्योग, विज्ञान के क्षेत्र में निश्चित रूप से ऐतिहासिक और प्रगतिशील कदम उठाया था, पर देश को वैचारिक दरिद्रता और सामाजिक-सांस्कृतिक जटिलता में छोड़ गए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

रपट

सुप्रीम कोर्ट सख्त, कहा - ऐसी गतिविधियां वन्यजीवों के लिए खतरनाक

अभयारण्यों के एक किमी के दायरे में खनन पर प्रतिबंध

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 13 नवंबर।

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को झारखंड सरकार को सारंडा वन क्षेत्र के 126 कंपार्टमेंट्स को तीन महीने के भीतर वन्यजीव अभयारण्य के रूप में अधिसूचित करने का निर्देश दिया और अभयारण्य की सीमा के एक किलोमीटर के दायरे में किसी भी प्रकार की खनन गतिविधि पर रोक लगा दी। प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन की पीठ ने तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा कि राज्य सरकार 31,468.25 हेक्टेयर क्षेत्र को सारंडा वन्यजीव अभयारण्य घोषित करने के अपने कर्तव्य से नहीं भाग सकती।

पीठ ने खनन के लिए निर्दिष्ट छह कंपार्टमेंट्स को इससे बाहर रखा। पीठ ने कहा कि हम निर्देश

पीठ ने कहा कि इस न्यायालय का लगातार यह मत रहा है कि संरक्षित क्षेत्र के एक किलोमीटर के दायरे में खनन गतिविधियां वन्यजीवों के लिए खतरनाक होंगी।

देते हैं कि राज्य सरकार 1968 की अधिसूचना में अधिसूचित 126 कंपार्टमेंट वाले क्षेत्र को इस फैसले की तारीख से तीन महीने की अवधि के भीतर वन्यजीव अभयारण्य के रूप में अधिसूचित करे। पीठ ने छह कंपार्टमेंट को शामिल नहीं किया है, उसमें कंपार्टमेंट संख्या केपी-2, केपी-10, केपी-11, केपी-12, केपी-13 और केपी-14 हैं। कंपार्टमेंट का उपयोग प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए अभयारण्यों को विभाजित करने के लिए किया जाता है। पीठ ने कहा कि इस न्यायालय का लगातार यह मत रहा है कि संरक्षित क्षेत्र के एक किलोमीटर के दायरे में खनन गतिविधियां वन्यजीवों के लिए खतरनाक होंगी। हालांकि गोवा फाउंडेशन के मामले में उक्त निर्देश गोवा राज्य के संबंध में जारी किए गए थे और हमें लगता है कि ऐसे निर्देश पूरे भारत में जारी किए जाने की आवश्यकता है।

पीठ ने कहा कि हम निर्देश देते हैं कि राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों के भीतर व ऐसे राष्ट्रीय उद्यान या वन्यजीव अभयारण्य की सीमा से एक किलोमीटर के दायरे में खनन की अनुमति नहीं होगी। राज्य सरकार ने दलील दी कि इस कदम से आदिवासी समुदाय के वन अधिकारों की रक्षा करने और उस क्षेत्र में पहले से मौजूद विद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों को सुरक्षित रखने में मदद मिलेगी।

न्यायालय ने राज्य सरकार की इस दलील को खारिज कर दिया और कहा कि वन अधिकार अधिनियम, 2006 की धारा 24(2)(सी) व अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पारंपरिक वनवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 की धारा 4(1) के साथ-साथ धारा 3 में निहित प्रावधान उक्त क्षेत्र को वन्यजीव अभयारण्य घोषित किए जाने के बाद भी आदिवासियों और वनवासियों के अधिकारों की पर्याप्त रक्षा करते हैं। पीठ ने कहा कि यह भ्रम कि वन्यजीव अभयारण्य घोषित होने पर आदिवासियों और पारंपरिक वनवासियों के आवास व अधिकार नष्ट हो जाएंगे।

Jansatta Page No-12

एच1बी वीजा कार्यक्रम : ट्रंप की नीतियों को लेकर बेसेंट ने कहा

कुशल विदेशी कर्मी अमेरिकियों को प्रशिक्षित करें और लौटें

न्यूयार्क/वाशिंगटन, 13 नवंबर (भाषा)।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा एच1बी वीजा कार्यक्रम का बचाव करने के एक दिन बाद, वित्त मंत्री स्काट बेसेंट ने कहा कि इसके पीछे सोच कुशल विदेशी कामगारों को लाने की है जो अमेरिकियों को प्रशिक्षित करें और फिर स्वदेश लौट जाएं।

बेसेंट ने बुधवार को कहा कि यहां राष्ट्रपति का दृष्टिकोण विदेशी कामगारों को लाना है, जहां ये नौकरियां थीं, जिनके पास कौशल है। अमेरिकी कामगारों को प्रशिक्षित करने के लिए तीन, पांच, सात साल लगेंगे, फिर वे स्वदेश लौट जाएंगे। अमेरिकी कामगार पूरी तरह से कार्यभार संभाल लेंगे। वित्त मंत्री से एच-1बी वीजा कार्यक्रम पर ट्रंप की नवीनतम टिप्पणी के बारे में पूछा गया था, जिसमें राष्ट्रपति ने कहा था कि अमेरिका को प्रतिभाओं को लाना होगा क्योंकि उसके पास 'कुछ खास प्रतिभाएं' नहीं हैं। बेसेंट ने कहा कि 20-30 वर्षों से, अमेरिका ने विनिर्माण क्षेत्र की नौकरियां विदेशों में स्थानांतरित कर दी हैं। उन्होंने कहा कि यहां राष्ट्रपति का कहना है कि हम यह नहीं कह सकते कि 'आप रातों-रात जहाज बनाना सीख जाएंगे। हम सेमीकंडक्टर उद्योग को वापस अमेरिका लाना चाहते हैं। बेसेंट ने कहा कि विदेशी साझेदारों का आना, अमेरिकी कर्मियों को प्रशिक्षित करना और फिर स्वदेश लौट जाना, यह विचार है।

'हम अपने वीजा कार्यक्रमों का उपयोग जारी रख रहे हैं'

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एच-1बी वीजा का बचाव करने के एक दिन बाद गृह सुरक्षा मंत्री क्रिस्टी नोएम ने कहा कि अमेरिका इन वीजा कार्यक्रमों का उपयोग जारी रखेगा। साथ ही उन्होंने कहा कि ट्रंप प्रशासन के दौरान अधिक विदेशी लोगों को अमेरिकी नागरिकता मिली है। नोएम ने कहा कि हम अपने वीजा कार्यक्रमों का इस्तेमाल जारी रख रहे हैं। हम यह देख रहे हैं कि जो लोग इस देश में आ रहे हैं, वे सही कारणों से आना चाहते हैं और आतंकवादियों और आतंकी संगठनों के समर्थक नहीं हैं। नोएम से पूछा गया था कि ट्रंप की हालिया टिप्पणी के मद्देनजर एच-1बी वीजा पर प्रशासन का क्या रुख है।

Jansatta Page No-12

कम मतदान वाली दस सीटों पर रहेंगी निगाहें

जनसत्ता ब्यूरो

बिहार की दस सीटों पर राजनीतिक दलों से लेकर निर्वाचन आयोग के अधिकारियों की नजर है। तमाम प्रचार और अपील के बाद भी यहां के मतदाताओं ने एक अनोखा कीर्तिमान बनाया है, जो सबसे कम मतदान करने का है। निर्वाचन आयोग के जारी आंकड़ों से पता चला है कि इन सीटों पर 50 फीसदी से कम मतदान हुआ है, हालांकि निर्वाचन आयोग पहले ही दावा कर चुका है कि इस बार बिहार के चुनाव में सर्वाधिक मतदान दर्ज किया गया है, जो कि वर्ष 1951 के बाद से लेकर अब तक हुए चुनाव का सबसे अधिक मतदान है। इस बार के चुनाव में बिहार की 243 सीट पर में कुल 67.14 फीसद मतदान दर्ज किया गया है।

आंकड़े

कुम्हरार विधानसभा में पूरे चुनाव का सबसे कम मतदान दर्ज किया गया है। इस सीट के लिए केवल 40.17 फीसद मतदाताओं ने ही अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। इस सीट पर कांग्रेस और भाजपा के बीच में सीधी टक्कर है। महागठबंधन के सहयोगी होने के नाते यहां अन्य दलों के उम्मीदवार मैदान में नहीं है। हालांकि 2020 के चुनाव में यह सीट भाजपा के कब्जे में थी और इस सीट पर राष्ट्रीय जनता दल दूसरे नंबर की पार्टी बनकर उभरा था।

कुम्हरार विधानसभा में पूरे चुनाव का सबसे कम मतदान दर्ज किया गया है। इस सीट के लिए केवल 40.17 फीसद मतदाताओं ने ही अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। इस सीट पर कांग्रेस और भाजपा के बीच में सीधी टक्कर है। महागठबंधन के सहयोगी होने के नाते यहां अन्य दलों के उम्मीदवार मैदान में नहीं है। हालांकि 2020 के चुनाव में यह सीट भाजपा के कब्जे में थी और इस सीट पर राष्ट्रीय जनता दल दूसरे नंबर की पार्टी बनकर उभरा था। यह सीट हमेशा से ही भाजपा के कब्जे वाली सीट रही है, लेकिन कम मतदान का असर यहां उम्मीदवारों के लिए कांटे की टक्कर सीधा समीकरण बना रहा है। सबसे कम मतदाताओं वाली सीट में दीघा विधानसभा भी शुमार है, जहां पर मतदान का फीसद केवल 40.17 फीसद दर्ज किया गया है।

इसी प्रकार सबसे कम मतदान वाली विधानसभाओं में पहले चरण की आरा (57.38 फीसद), बिहार शरीफ (55 फीसद) और दौराली (57 फीसद) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे चरण में बिहार की कोई भी ऐसी विधानसभा नहीं थी, जहां पर 50 फीसद से कम मतदान हुआ है। इस चरण में आयोग ने 122 सीट के लिए मतदान कराया था। इस चरण के तहत आने वाली भागलपुर सीट पर 57.15 फीसद मतदान दर्ज किया गया है। इसके अतिरिक्त कम मतदान वाली सीट में नवादा (55.07 फीसद), बाल्मिकीगंज (58.03 फीसद), हिसुआ (58.50 फीसद) और जीरादेई (57.17 फीसद) शामिल है। बिहार में दर्ज इस मतदान की एक और अनोखी बात यह भी है कि इस चुनाव में महिला मतदाताओं ने पुरुषों के मुकाबले अधिक मतदान किया है। दोनों चरण के बाद पुरुषों का मतदान केवल 62.98 फीसद और महिलाओं का मतदान फीसद 71.78 रहा है।

Jansatta Page No-18

रेकार्ड मतदान में युवाओं की बढ़ी भागीदारी

इन मतदाताओं का रुझान किसी एक दल या गठबंधन के पक्ष में नहीं

जनसत्ता ब्यूरो

बिहार विधानसभा चुनाव के दोनों चरणों में खासतौर पर रोजगार और पलायन के मुद्दे पर राजनीतिक दलों ने युवाओं को साधने की पुरजोर कोशिशें कीं। इसका असर भी दिखा और लंबे अर्से से इन मुद्दों को उठाने वाले युवाओं ने इस बार राजनीतिक दलों को सत्ता तक पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जन सुराज के अलावा कई और दलों ने भी इन मुद्दों को उठाया, जिसका फायदा किस गठबंधन को मिलेगा, यह नतीजे आने पर साफ हो जाएगी। विशेषज्ञों का कहना है युवाओं ने इस बार अधिक संख्या में मतदान में हिस्सा लिया, लेकिन किसी एक दल या गठबंधन को इसका एकमुश्त फायदा मिलने की संभावना कम है, क्योंकि अलग-अलग वजहों के आधार पर मतदान किए गए।

उम्मीद

नौकरी और पलायन के मुद्दे पर राजनीतिक विश्लेषक अमित कुमार का कहना है जन सुराज ने इन मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। उन्होंने कहा, नौकरी, पेपर लीक जैसे मुद्दों पर राजनीतिक दलों ने विमर्श किया, लेकिन किसी भी दल के लिए युवाओं ने एकपक्षीय मतदान नहीं किया। उन्होंने कहा, नौकरियों की तैयारी करने वाले युवाओं में बेचैनी दिखी, लेकिन ग्रामीण इलाकों में इन मुद्दों से इतर भी युवाओं ने मतदान किया।

सात जिलों में महिलाओं ने मतदान में पुरुषों को पीछे छोड़ा

बिहार विधानसभा चुनाव में महिलाओं ने एक बार फिर मतदान में बढ़त बनाई है और राज्य के सात जिलों में महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में 14 प्रतिशत या उससे अधिक बढ़त के साथ मतदान किया, जबकि 10 अन्य जिलों में यह अंतर 10 प्रतिशत से अधिक रहा। निर्वाचन आयोग के आंकड़ों में इसकी जानकारी दी गई है। पटना राज्य का एकमात्र जिला रहा, जहां पुरुषों का मतदान प्रतिशत महिलाओं से अधिक दर्ज किया गया। पटना में जहां 60.05 प्रतिशत पुरुषों ने वोट डाले, वहीं महिलाओं का मतदान प्रतिशत 57.88 रहा। बिहार के 243 विधानसभा क्षेत्रों में छह और 11 नवंबर को दो चरणों में मतदान हुआ था और परिणाम शुक्रवार 14 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। इस बार राज्य में 67.13 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया, जो अब तक का सबसे अधिक है। आयोग के आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं की वोटिंग 71.78 प्रतिशत रही, जबकि पुरुषों का मतदान प्रतिशत 62.98 रहा। निर्वाचन आयोग के सभी 38 जिलों के 'जेंडर-वाइज' आंकड़ों के मुताबिक सुपौल में सबसे बड़ा अंतर दर्ज हुआ।

विकास अनुसंधान संस्थान के निदेशक दिगंबर मिश्र दिवाकर ने कहा, युवाओं को लेकर कोई स्पष्ट आंकड़ा नहीं आया, लेकिन युवाओं ने इस बार भारी संख्या में मतदान किया। नौकरी और विकास के मुद्दे पर उन्होंने मतदान किया, लेकिन एकमुश्त किसी दल को इसका फायदा मिलेगा, ऐसा नहीं है। फिर भी चर्चा है कि महागठबंधन को युवा मतदाताओं का थोड़ा अधिक फायदा मिल सकता है।

जन सुराज पार्टी के कैप्टन राजीव रंजन ने कहा, उनकी पार्टी ने रोजगार और पलायन के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया। युवाओं में नौकरी की कम होती उम्मीद के रोष के तौर पर मताधिकार किया। उन्होंने बताया कि 2020 की तुलना में इस बार अधिक मत पड़े, इनमें महिलाओं के अलावा युवाओं की भी अहम भूमिका रही। अनुग्रह नारायण सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान के राजीव कमल ने पलायन, रोजगार के अलावा युवा कामगारों ने भी इस बार अपने प्रदेश को देखते हुए विकास की उम्मीद में मतदान किए हैं।

Jansatta Page No-18

www.jagran.com
बिहार, झारखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

जेपी इंफ्राटेक के पूर्व एमडी मनोज गौड़ गिरफ्तार 15
निर्यात को बढ़ावा देने के फैसले से बढ़ेगी प्रतिस्पर्धा: पीएम मोदी 15

किसके सिर ताज, जनादेश आज

महासमर बिहार

बरबीघा व मखदुमपुर का पहले तथा अंत में दीघा व हिसुआ का आएगा परिणाम, 16 तक रहेगी निषेधाज्ञा

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: विधानसभा चुनाव में किसके सिर ताज सजेगा, इसका फैसला शुक्रवार को हो जाएगा। 18वीं बिहार विधानसभा के लिए दो चरणों में मतदान हुआ था। प्रदेश के 46 केंद्रों पर सुबह आठ बजे से मतों की गिनती शुरू होगी। 243 विधानसभा क्षेत्रों में कुल 2,616 उम्मीदवार हैं। पूरी प्रक्रिया सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में होगी। वीडियोग्राफी भी होगी। दोपहर तक तय हो जाएगा कि जनता ने किस गठबंधन को अगले पांच वर्षों के लिए राजपाट चलाने का जनादेश दिया है। मुख्य संघर्ष राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) और महागठबंधन के बीच है। नई जन सुराज पार्टी भी गंभीरता से चुनाव लड़ी।

परिणाम से पता चलेगा कि आम जनता ने जन सुराज का मूल्यांकन किस रूप में किया है। चुनाव मुख्य रूप से विकास और बदलाव मुद्दे पर लड़ा गया। 20 साल से मुख्यमंत्री रहे नीतीश के अगले पांच साल के कार्यकाल के लिए एनडीए ने जनता से अपील की। उधर, महागठबंधन ने तेजस्वी को अगले मुख्यमंत्री के रूप में प्रस्तावित किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री नीतीश, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, सांसद प्रियंका, विपक्ष के नेता तेजस्वी सहित अन्य नेताओं ने गठबंधन के उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया।

संबंधित खबरें » पेज 6, 9 व 11

सभी 243 सीटों के नतीजों के अपडेट के लिए स्कैन करें

243 सीटों के लिए हुआ है मतदान | **121** सीटें पहले चरण में | **122** सीटें दूसरे चरण में

122 सीट बहुमत के लिए

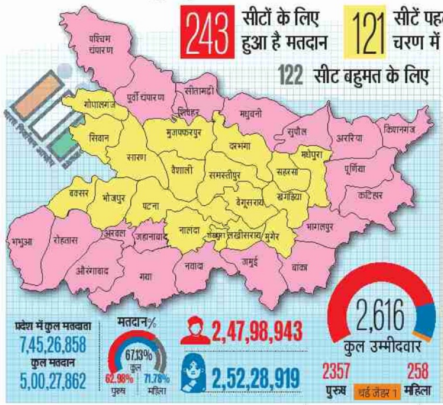

पटना में आज बंद रहेंगे सभी सरकारी और निजी स्कूल

8:00 बजे सुबह से शुरू होगी डाक मतपत्रों की गिनती, 8.30 बजे के उपरांत ईवीएम खुलेगी

10:30 बजे से आने लगेगा रुझान, त्रि-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था रहेगी मतगणना केंद्रों पर

प्रदेश में कुल मतदाता **7,45,26,858**
कुल मतदान **5,00,27,862**

मतदान%: 67.13% कुल; 62.98% पुरुष; 71.78% महिला

2,47,98,943 (पुरुष)
2,52,28,919 (महिला)

2,616 कुल उम्मीदवार
2357 पुरुष | थर्ड जेंडर 1 | 258 महिला

मतगणना को ले पुलिस मुख्यालय का निर्देश

- सभी जिलों में अलर्ट, उपद्रव किया तो होंगे गिरफ्तार
- रात से ही सभी जिलों में शुरू हुआ चेकिंग अभियान
- जीत के बाद विजय जुलूस निकालने की अनुमति नहीं

106 कंपनी अर्द्धसैनिक बल तैनात
100 कंपनी बिहार विशेष सशस्त्र बल
19,000 प्रशिक्षु पुलिस तैनात

प्रमुख चेहरे

पहला चरण नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा, तेजप्रताप यादव, विजय कुमार चौधरी और मंगल पांडेय।

दूसरा चरण तार किशोर प्रसाद एवं रेणु देवी, नीतीश मिश्रा, बिजेंद्र प्रसाद यादव, लेशी सिंह, प्रेम कुमार, उदय नारायण चौधरी, राजेश राम, शकील अहमद खान।

65.08% मतदान हुआ था पहले चरण के चुनाव के दौरान
69.20% मतदान हुआ था दूसरे चरण के चुनाव के दौरान

चार विस चुनाव में पड़े मत

वर्ष	मत
2010	52.67%
2015	56.66%
2020	57.34%
2025	67.13%

पटना के एएन कालेज स्थित मतगणना केंद्र के बाहर तैनात जवान। मतगणना केंद्रों के आसपास कड़ी सुरक्षा व्यवस्था है। • एएनआइ

2020 का परिणाम — 17वीं विस का आंकड़ा

राजग (125)	
भाजपा	74
जदयू	43
हम	4
वीआइपी	4

बाद में एआइएमआइएम के चार विधायक राजद में शामिल हो गए। बसपा और लोजपा के विधायक ने जदयू की सदस्यता ली। विकासशील इंसान पार्टी के चार विधायक भाजपा में समाहित हो गए।

महागठबंधन (110)	
राजद	75
कांग्रेस	19
भाकपा माले	12
भाकपा	2
माकपा	2

महिलाओं की अधिक भागीदारी

दोनों चरणों में कुल 67.20 प्रतिशत मतदान और उसमें पुरुषों की तुलना में महिलाओं की करीब 10 प्रतिशत अधिक भागीदारी के रूप में इस चुनाव में दो नए रिकार्ड बने। रिकार्ड यह भी बना कि 90 हजार से अधिक मतदान केंद्रों पर मतदान हुए और किसी एक पर भी पुनर्मतदान की नौबत नहीं आई। जनादेश एनडीए के पक्ष में आता है तो नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बनेंगे। तब उनका नाम ज्योति बसु (पश्चिम बंगाल), नवीन पटनायक (ओडीसा) एवं पवन कुमार चामलिंग जैसे मुख्यमंत्रियों की सूची में शामिल हो जाएगा, जिन्हें 20 साल से अधिक समय तक इस पद पर रह कर राज्य की सेवा का अवसर मिला।

गड़बड़ी पर यहां दें सूचना
दूरभाष संख्या 0612-2824001
फैक्स नंबर 0612-2215611
ceo_bihar@eci.gov.in
ceobihar@gmail.com

Dainik Jagaran Page No-13

श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र में जीवंत हुई मानव की विकास यात्रा

जागरण संवाददाता, पटना : श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र की इवोल्यूशन गैलरी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। गैलरी में लगी 240 इंच की सिलिंड्रिकल स्क्रीन मानव की विकास यात्रा को समझने का साधन बनी है। वर्ष 1997 में बनी इस गैलरी का रेनोवेशन कर अत्याधुनिक तकनीक से लैस किया गया है। इसमें लगे एग्जिबिट के बारे में दर्शक डिजिटल रूप से जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। गैलरी में चार सौ सीसी से 1350 सीसी तक हुए मानव मस्तिष्क के विकास को प्रदर्शित किया गया है। इसमें जीवाश्म, शरीर रचना विज्ञान, समय के साथ विकास और जीवन के परिवर्तन की जानकारी के लिए डिजिटल पुस्तक भी है। गैलरी की खास बात है कि हर प्रदर्श के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करने के लिए क्यूआर कोड लगाया गया है। स्कैन कर पूरी जानकारी दर्शक प्राप्त कर रहे हैं। गैलरी में 70 से 60 लाख वर्ष पहले के चिंपैंजी, 39 से 29 लाख वर्ष पहले की लूसी और 30 लाख साल पहले की होमो सेपियंस को प्रदर्शित किया गया है। गैलरी में जीवन का वृक्ष भी लगाया गया है। इसमें पृथ्वी पर पाए जाने वाले लाखों जीव जंतु में से कुछ प्रमुख जीव जंतुओं को प्रदर्शित किया गया है। बीते वर्ष 24 नवंबर को नए गैलरी का शुभारंभ किया गया था।

गैलरी को दखने के लिए बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे आ रहे हैं। उन्होंने जिन बातों को किताबों में पढ़ा है उसे प्रदर्श के रूप में देखकर वे उत्साहित हो रहे हैं। इससे उनका ज्ञानवर्द्धन भी हो रहा है तथा तथ्यों को वे नए परिप्रेक्ष्य में देखकर कुछ नया सीख रहे हैं।

240 इंच बड़ी सिलिंड्रिकल स्क्रीन पर विकास यात्रा की जानकारी दी जा रही

1997 में बनी इस गैलरी को अत्याधुनिक तकनीक से लैस किया गया

- पृथ्वी पर पाए जाने वाले दुर्लभ जीव जंतुओं को दर्शाया गया
- क्यूआर कोड स्कैन कर प्रदर्श की जानकारी ले रहे हैं दर्शक

श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र में मानव विकास यात्रा गैलरी में प्रदर्शित कलाकृति • जागरण

वर्चुअल रियलिटी का प्रयोग कर रहा अचंभित

जासं, पटना: मानव के विकास यात्रा को क्रमबद्ध दिखाने को लेकर विज्ञान केंद्र परिसर में बनी गैलरी को आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर बनाया गया है। गैलरी को डिजिटल तकनीक के साथ वर्चुअल रियलिटी का प्रयोग अचंभित कर रहा है। गैलरी वातानुकूलित होने के साथ लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी है।

मानव के खोपड़ी की रेप्लिका यूएसए से मंगाई गई है। यहां लोग आडियो विजुअल के जरिए मानव के क्रमागत उन्नति को देख और सुन सकते हैं। चार्ल्स डार्विन की मूर्ति और उनके सिद्धांत भी लगाए गए हैं। दर्शक यहां पर थ्रीडी मॉडल के जरिए स्ट्रक्चर और रॉक फॉसिल को प्रदर्शित किया गया है। वहीं दूसरी ओर ओशियन गैलरी महासागर दीर्घा में लोगों को समुद्र से जुड़ी विज्ञान और जीव-जंतुओं के बारे में जानकारी मिल रही है। छह हजार वर्गफुट में बनी गैलरी में 13 प्रदर्श के जरिए लोगों को समुद्र में पाए जाने वाले विभिन्न तथ्यों के बारे में अवगत हो रहे हैं।

गैलरी में चार्ल्स डार्विन की प्रतिकृति लगाकर उनकी रिसर्च की जानकारी दी गई है।

Dainik Jagaran Page No-11

जी7 के विदेश मंत्रियों की बैठक में एस जयशंकर ने वैश्विक अनिश्चितता पर चिंता जताई, कहा

साझेदारी बढ़ाकर निर्भरता कम करने की जरूरत

ओटावा, 13 नवंबर (भाषा)।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कनाडा में आयोजित जी7 विदेश मंत्रियों की बैठक (एफएमएम) के ऊर्जा सुरक्षा और महत्वपूर्ण खनिजों पर हुए एक सत्र में भाग लिया और भारत का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। जयशंकर ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि उन्होंने दोनों मुद्दों पर 'निर्भरता को कम करने, पूर्वानुमेयता को मजबूत करने और लचीलापन विकसित करने' की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाना है।

जयशंकर नियाग्रा में जी7 साझेदार देशों के साथ एक संवाद सत्र में भाग लेने पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि वैश्विक आपूर्ति में अनिश्चितता और बाजार में रुकावटें देखी गई हैं। अधिक नीतिगत परामर्श और समन्वय उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन असली जरूरत है कि इन बातों को जमीनी स्तर पर लागू किया जाए। भारत इस दिशा में अंतरराष्ट्रीय साझेदारों के साथ रचनात्मक रूप से काम करने के लिए

कनाडा में जी7 विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर और अन्य।

तैयार है। इससे पहले, बुधवार को जयशंकर ने जी7 एफएमएम आउटरीच सत्र के दौरान यूक्रेन, सऊदी अरब और यूरोपीय संघ के अपने समकक्षों से अलग-अलग मुलाकात कीं और परस्पर हितों से जुड़े क्षेत्रीय मुद्दों तथा हालिया घटनाक्रमों पर चर्चा की। एक अन्य पोस्ट में विदेश मंत्री ने बताया कि उनकी यूक्रेन के विदेश मंत्री आंद्रेई सिबिहा के साथ उपयोगी बातचीत हुई। उन्होंने कहा कि सिबिहा ने यूक्रेन के हालिया घटनाक्रमों पर अपना दृष्टिकोण साझा किया। जयशंकर ने सऊदी अरब के विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान से भी मुलाकात की और द्विपक्षीय संबंधों, क्षेत्रीय मुद्दों, संपर्क और ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग जैसे कई विषयों पर चर्चा की। यूरोपीय संघ की विदेश नीति प्रमुख कजा कालस से मुलाकात के बाद जयशंकर ने कहा कि हमारी बातचीत का केंद्र भारत-यूरोपीय संघ रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करना और जी7 बैठक के एजेंडे पर विचार साझा करना रहा। जयशंकर ने अपने अमेरिकी समकक्ष मार्को रुबियो से भी बातचीत की, जो मुख्य रूप से व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े मुद्दों पर केंद्रित रही।

विदेश मंत्री ने अपनी कनाडाई समकक्ष अनीता आनंद से भी मुलाकात की और व्यापार, ऊर्जा, सुरक्षा और लोगों के बीच संपर्क जैसे क्षेत्रों में भारत-कनाडा सहयोग की समीक्षा की। दोनों देशों के रिश्तों को फिर से मजबूत करने के प्रयासों के तहत यह चर्चा हुई, जो दो वर्ष पहले राजनयिक विवाद के बाद तनावपूर्ण हो गए थे। जयशंकर ने इसके अलावा जर्मनी, फ्रांस, ब्राजील और ब्रिटेन के विदेश मंत्रियों के साथ भी अलग-अलग द्विपक्षीय वार्ताएं कीं। फ्रांस के विदेश मंत्री जीन-नोएल बारो के साथ बैठक के बाद जयशंकर ने सोशल मीडिया पर कहा कि हमने अपनी रणनीतिक साझेदारी की समीक्षा की और बहुपक्षीय एवं बहु-पक्षीय मंचों पर सहयोग को गहरा करने पर चर्चा की। ब्राजील के विदेश मंत्री माउरो विएरासे मुलाकात के बाद उन्होंने कहा कि हम व्यापार, निवेश, स्वास्थ्य और प्रौद्योगिकी सहयोग के लिए अधिक अवसरों की सक्रिय रूप से तलाश कर रहे हैं।

जर्मनी के विदेश मंत्री जोहान वेडेफुल के साथ हुई चर्चा में द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी और भारत-यूरोपीय संघ संबंधों को आगे बढ़ाने पर जोर दिया गया। जयशंकर ने बताया कि उन्होंने और वेडेफुल ने पश्चिम एशिया, हिंद-प्रशांत और अफगानिस्तान की स्थिति पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया। ब्रिटेन के विदेश मंत्री येवेट कूपर के साथ बैठक के बाद जयशंकर ने कहा कि भारत-ब्रिटेन संबंधों में सकारात्मक गति को स्वीकार किया गया है।

Jansatta Page No-12

मंत्रालय ने सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों को राजमार्ग संबंधी जारी किए आदेश

परियोजना में राष्ट्रीय आंकड़ों का प्रयोग जरूरी

पंकज रोहिला
नई दिल्ली, 13 नवंबर।

नए निर्माण परियोजनाओं में अब राष्ट्रीय स्तर के आपदा प्रबंधन पोर्टल (एनडीएमइ) के आंकड़े का प्रयोग होगा। देश के सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों को किसी भी योजना की विस्तृत कार्य योजना (डीपीआर) निर्माण के समय भी ही इन आंकड़ों व जानकारियों को अपनी योजना से जोड़ना होगा।

इस पहल से किसी भी योजना का कृत्रिम मेधा (एआइ) से बना प्रारूप संबंधित एजंसी को मिल पाएगा और भविष्य में परियोजनाओं की राह में आने वाली अड़चनों को दूर किया जा सकेगा। केंद्र सरकार के सड़क परिवहन मंत्रालय की ओर से इस बाबत दिशा निर्देश

जारी किए गए हैं। मंत्रालय के मुताबिक केंद्र सरकार का राष्ट्रीय रिमोट सेंसिग केंद्र (एनआरएससी) को भारतीय अंतरिक्ष अध्ययन संगठन (आइएसआरओ) द्वारा राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा दिशा निर्देशित किया जाता है।

इस पोर्टल की मदद से किसी भी जगह पहुंचने से लिए जियोस्पेशियल तकनीक जानकारियां दी जाती हैं ताकि किसी भी आपदा के समय में आपदा प्रबंधन, जोखिम प्रबंधन और निर्माण क्षेत्र के लिए कार्य योजना तैयार की जा सके। मंत्रालय का मानना हे कि इस तकनीक का प्रयोग करके जहां एक ओर भविष्य में किसी भी परियोजना में आपदा प्रबंधन के जोखिम को कम किया जा सकेगा, वहीं दूसरी ओर यह तकनीक किसी भी परियोजना के आंकलन में आने वाली खामियों की जानकारी भी देगी।

मंत्रालय के मुताबिक, यह तकनीक किसी भी आपदा में बाढ़, जमीन धंसना, प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए सहयोग करेगी। इस तकनीक के माध्यम से राज्य सरकारों के पास पहले ही बहुत अधिक तकनीकी जानकारियां उपलब्ध होंगी।

Jansatta Page No-10

लाल किला विस्फोट स्पष्ट रूप से आतंकवादी हमला था : रुबियो

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 13 नवंबर।

अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा है कि लाल किला के निकट हुआ कार विस्फोट 'स्पष्ट रूप से' एक आतंकवादी हमला है तथा इस घटना की जांच में भारत की 'बहुत संयमित' और 'अत्यंत पेशेवर' भूमिका की सराहना की। दिल्ली में लाल किला के बाहर सोमवार को हुए एक जबरदस्त विस्फोट में कम से कम 13 लोगों की जान चली गई। भारत ने इस कार विस्फोट को बुधवार को 'जघन्य आतंकी घटना' करार दिया।

रुबियो ने बुधवार को कनाडा के हैमिल्टन शहर में संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'हां, हम इस घटना की गंभीरता और उसके प्रभाव से अवगत हैं। लेकिन मेरा मानना है कि भारतीय अधिकारियों की सराहना की जानी चाहिए, उन्होंने बहुत संयमित, सतर्क और पेशेवर तरीके से जांच की है।'

उन्होंने कहा, 'जांच जारी है। यह स्पष्ट रूप से एक आतंकी हमला था। एक कार में भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री भरी हुई थी, जिसमें विस्फोट हुआ और कई लोगों की जान चली गई। लेकिन भारत बहुत अच्छी तरह से जांच कर रहा है और मेरा विश्वास है कि जब उनके पास सभी तथ्य होंगे, तो वे उन्हें सार्वजनिक करेंगे।' रुबियो ने जी7 के विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर से भी मुलाकात की थी।

Jansatta Page No-10

चिंताजनक नवंबर माह से पक्षियों का आगमन हो जाता है शुरू, झील में पानी न होने से ठहर नहीं रहे

ओखला पक्षी विहार की झील सूखी, परिंदों ने फेरा मुंह

हर्ष मिश्रा
नोएडा,13 नवंबर।

लगभग आधा नवंबर माह बीत गया है और ओखला पक्षी विहार स्थित झील में पानी नहीं पहुंचा है। ऐसे में यहां से परिंदे मुंह मोड़ते नजर आ रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि पक्षी तो आ रहे हैं लेकिन यहां पानी न होने की वजह से ठहर नहीं रहे हैं।

अहम बात यह है कि हर वर्ष नवंबर माह की शुरूआत में ही यहां पर पक्षी आना शुरू हो जाते हैं और यह पक्षी विहार परिंदों के कलरव से गुलजार हो जाता था। पक्षियों के न आने से पर्यटकों की संख्या में भी कमी आई है। वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि झील में चार से पांच दिनों के भीतर पानी आने की संभावना है। सिंचाई विभाग द्वारा बैराज का मरम्मत कार्य किया जा रहा है जिस वजह से यह स्थिति उत्पन्न हुई है।

जल्द ही पानी आने के बाद यहां स्थिति पहले जैसी हो सकेगी। वहीं यहां घूमने पहुंच रहे लोग सूखी झील देखकर काफी निराशा के साथ लौट रहे हैं। गुरुवार को यहां अपने परिवार के साथ पहुंचे रामकिशन बताते हैं कि आज परिवार को यहां घुमाने के लिए पहुंचा था लेकिन झील सूखी हुई है ऐसे में यहां पर कुछ देखने लायक है ही नहीं। दिल्ली के शाहीन बाग से पहुंचे नौशाद बताते हैं कि यहां पहली बार आए हैं, यहां के बारे में काफी सुना है लेकिन यहां झील सूखी होने के कारण निराशा हुई।

> "इस सप्ताह के भीतर पानी आने की संभावना है। फिर से पक्षी विहार पक्षियों से गुलजार होगा। पर्यटकों के लिए काफी सुविधाएं भी हैं। किसी को कोई परेशानी न हो इसका ख्याल रखा जाएगा। - **अमित कुमार**, वन परिक्षेत्र अधिकारी

विशेषज्ञों का कहना है कि पक्षियों को पानी न मिलने पर वह कहीं और भी जा सकते हैं। अहम बात यह है कि हर वर्ष ओखला पक्षी विहार में साइबेरियन देशों से प्रवासी पक्षी आते हैं। बीते वर्ष ओखला पक्षी विहार में 15 हजार तक पक्षी पहुंचे थे। इस बार स्थिति काफी खराब है। अनुमान के अनुसार इस बार अब एक हजार पक्षी भी नहीं पहुंचे हैं।

Jansatta Page No-4

मूडीज का वर्ष 2025 के लिए आकलन

भारत की आर्थिक वृद्धि दर सात फीसद रहेगी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 13 नवंबर।

मूडीज रेटिंग्स ने भारत की अर्थव्यवस्था के 2025 में सात फीसद और अगले वर्ष 6.5 फीसद की दर से बढ़ने का गुरुवार को अनुमान लगाया। मूडीज ने अपने 'ग्लोबल मैक्रो आउटलुक' में कहा कि भारत की आर्थिक वृद्धि को मजबूत बुनियादी ढांचे पर खर्च व ठोस उपभोग से समर्थन मिल रहा है हालांकि निजी क्षेत्र व्यवसायिक पूंजीगत व्यय को लेकर सतर्क बना हुआ है।

कैलेंडर वर्ष 2025 के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर सात फीसद रहने का अनुमान है जो 2024 के 6.7 फीसद से अधिक है। वास्तविक जीडीपी, आधार वर्ष 2011-12 पर आधारित होती है। कुछ उत्पादों पर 50 फीसद अमेरिकी शुल्क का सामना कर रहे भारतीय निर्यातकों ने निर्यात को पुनर्निर्देशित करने में सफलता हासिल की है। सितंबर में उनका कुल निर्यात 6.75 फीसद बढ़ा, जबकि अमेरिका को निर्यात में 11.9 फीसद की गिरावट आई।

मूडीज ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि 2026 और 2027 में इसकी अर्थव्यवस्था 6.5 फीसद के आसपास बढ़ती रहेगी जिसे कम मुद्रास्फीति के बीच तटस्थ-से-उदार मौद्रिक नीति रुख का समर्थन प्राप्त होगा।'

चीन के लिए मूडीज ने अनुमान लगाया है कि 2025 में उसकी अर्थव्यवस्था पांच फीसद बढ़ेगी जिसे सरकारी प्रोत्साहन और मजबूत निर्यात का समर्थन प्राप्त होगा। 2027 तक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि धीरे-धीरे घटकर 4.2 फीसद हो सकती है।

रेटिंग एजंसी ने कहा, 'वैश्विक स्तर पर जीडीपी की वृद्धि दर 2026 और 2027 में 2.5 एवं 2.6 फीसद के बीच रहने का अनुमान है जो 2025 के 2.6 फीसद और 2024 के 2.9 फीसद से कम है।' मूडीज ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि 2026 और 2027 में इसकी अर्थव्यवस्था 6.5 फीसद के आसपास बढ़ती रहेगी।

आत्मनिर्भरता के सपने को साकार करने में मदद : मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि निर्यात के संबंध में केंद्रीय मंत्रिमंडल के फैसलों से वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सुधार होगा और आत्मनिर्भरता के सपने को साकार करने में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, 'सुनिश्चित कर रहे हैं कि 'मेड इन इंडिया' का विश्व बाजार में डंका बजे। इससे निर्यात प्रतिस्पर्धा में सुधार होगा, एमएसएमई, पहली बार निर्यात करने वाले एवं श्रम-प्रधान क्षेत्रों को मदद मिलेगी।'

नियामकीय देरी व उच्च अनुपालन लागत से छोटे उद्यमों पर पड़ रहा असर : एसोचैम

उद्योग मंडल एसोचैम ने गुरुवार को कहा कि नियामकीय देरी, उच्च अनुपालन लागत और एक ही जगह हर प्रकार की मंजूरी व्यवस्था की कमी जैसी बाधाएं सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्यमों को अपनी क्षमता को हकीकत रूप देने से रोक रही हैं।

एसोचैम ने 'भारतीय राज्यों में व्यापार करने में सुगमता' शीर्षक से जारी अपनी रपट में सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्यमों को सशक्त बनाने के लिए त्वरित और राज्य स्तर सुधारों का आह्वान किया है। रपट इस बात पर जोर देती है कि डिजिटल और समयबद्ध व्यवस्था राज्यों में निवेश परिवेश को बेहतर बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

Jansatta Page No-10

वायु गुणवत्ता सूचकांक चार सौ के पार

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 13 नवंबर।

दिल्ली वाले दमघोंटू हवाओं में सांस लेने को मजबूर हैं। गुरुवार को दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक चार सौ से पार दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के मुताबिक दिल्ली का प्रदूषण स्तर गंभीर स्तर पर है और यह 405 दर्ज किया गया है। ठंड बढ़ने की वजह से प्रदूषण दिल्ली एनसीआर में रुक गया है और हवाओं की धीमी रफ्तार भी इस पर कोई असर नहीं डाल पाई। इस वजह से लोगों में खांसी और आंखों में जलन जैसा असर देखने को मिला।

गाजियाबाद व नोएडा में भी प्रदूषण का स्तर बेहद खराब दर्ज किया गया है। वायु गुणवत्ता का स्तर गजियाबाद में 370 और नोएडा में 389 दर्ज किया गया। जो कि बेहद खराब वातावरण का संकेत है। बीते कई दिनों से दिल्ली-एनसीआर प्रदूषण की चपेट में है। इस स्तर की वजह से ही समयबद्ध कार्य योजना (ग्रैप) भी लागू किया गया है। इस वजह से बड़ी संख्या में वाहनों का प्रयोग बंद है और सरकारी एजंसियों की तरफ से मार्ग पर धूल कण कम करने के लिए छिड़काव किए जा रहे हैं और हवाओं में नमी बढ़ाने के लिए स्प्रिंकल वाहनों की मदद से भी पानी छोड़ा जा रहा है। इसके बाद भी इस प्रदूषण में कोई कमी दर्ज नहीं हो पा रहा है।

नोएडा : 'हाइब्रिड मोड' में होगी पांचवीं तक पढ़ाई

जनसत्ता संवाददाता
नोएडा, 13 नवंबर।

गौतमबुद्ध नगर जिले में प्रदूषण के गंभीर स्तर को देखते हुए कक्षा पांच तक के बच्चों की पढ़ाई अब 'हाइब्रिड मोड' में होगी। छोटे विद्यार्थियों की सेहत को ध्यान में रखते हुए उन्हें अब आनलाइन या आफलाइन, किसी भी तरीके से पढ़ने की सुविधा दी गई है।

फिलहाल बढ़ते प्रदूषण के कारण ग्रैप-3 के तहत कई पाबंदियां लागू हैं और बच्चों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए यह कदम उठाया गया है। सरकार के नए निर्देश के अनुसार, अब अभिभावकों को यह अधिकार होगा कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजकर पढ़ाई कराएं या उन्हें घर से आनलाइन पढ़ाई कराएं। यह आदेश सीबीएसई सहित सभी अन्य बोर्डों के स्कूलों पर लागू होगा। निजी और सरकारी दोनों तरह के स्कूलों को छात्रों के लिए हाइब्रिड मोड में कक्षाओं की सुविधा उपलब्ध करानी होगी।

Jansatta Page No-4

Hindustan Page No-9

भारत मंडपम में आज से 44वां अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला शुरू

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 13 नवंबर।

भारत मंडपम में लगने वाले अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले के 44वें संस्करण का आगाज शुक्रवार (आज) से होने जा रहा है। इस साल मेले का विषय 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' रखा गया है। मेले का उद्घाटन शाम पांच बजे वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के राज्यमंत्री जितिन प्रसाद करेंगे। इसके अलावा दिल्ली के मंडप का उद्घाटन मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता दोपहर दो बजे करेंगी। 14 से 18 नवंबर तक मेला व्यापारियों के लिए खुलेगा और 19 से 27 नवंबर तक आम जनता के लिए मेले के दरवाजे खुले रहेंगे।

भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (आइटीपीओ) ने बताया कि मेले के टिकट 55 चयनित मेट्रो स्टेशनों से खरीदे जा सकेंगे। इनमें सात मेट्रो स्टेशन 'रेड लाइन', 11 'येलो लाइन', 16 'ब्लू लाइन', तीन 'ग्रीन लाइन', सात 'वायलेट लाइन', पांच 'पिंक लाइन', चार 'मैजेंटा लाइन', व एक-एक 'ग्रे लाइन' और 'एयरपोर्ट लाइन' पर टिकट मिलेगा। मेले का समय सुबह 10 बजे से शाम साढ़े 7 बजे तक का रखा गया है। व्यावसायिक दिवसों में मेले के टिकट का दाम वयस्क व्यक्ति के लिए 500 रुपए और बच्चों के लिए 200 रुपए रखा गया है। 19 नवंबर से जब आम जनता के लिए मेले के दरवाजे खुलेंगे तो शनिवार-रविवार व राजपत्रित अवकाश के दिन टिकट व्यस्कों के लिए 150 व बच्चों के लिए 60 रुपए का होगा। जबकि अन्य दिनों में वयस्कों के लिए टिकट का दाम 80 व बच्चों के लिए 40 रुपए रखा गया है। वरिष्ठजनों व दिव्यांगों के लिए प्रवेश निशुल्क रखा गया है।

'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की तर्ज पर सजे राज्यों के मंडप, 55 मेट्रो स्टेशनों पर मिलेगा टिकट।

जानकारी के अनुसार, इस साल मेले का क्षेत्रफल 1.50 लाख वर्गमीटर से अधिक है और करीब 30 राज्य व केंद्र शासित प्रदेश, 55 मंत्रालय व विभाग, 12 देश और 390 के करीब निजी क्षेत्र की कंपनियां मेले में भाग ले रही हैं। इस साल मेले के 'पार्टनर' राज्य बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान व उत्तर प्रदेश हैं, जबकि 'फोकस' राज्य झारखंड है। इस साल झारखंड अपनी स्थापना का 25वां साल मना रहा है और झारखंड मंडप में इसकी झलक दिखाई देगी। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के अनुरूप राज्यों ने अपने मंडपों को बेहद खूबसूरत सजाना शुरू कर दिया है। दिल्ली के मंडप को लालकिला की तर्ज पर सजाया गया है और ऊंची-ऊंची दीवारों को खड़ा किया गया है, जबकि पंजाब का मंडप वहां की पुरानी हवेलियों की तरह दिख रहा है।

किसका बिहार, किसकी हार

फैसला आज

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 13 नवंबर।

बिहार के सभी 243 विधानसभा क्षेत्रों में शुक्रवार को मतगणना के व्यापक और सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। सत्ताधारी राजग और चुनौती दे रहे महागठबंधन में से बिहार किसका होगा और किसकी हार होगी, इसका फैसला हो जाएगा। प्रदेश में सत्ताधारी राजग आराम से सत्ता बरकरार रखने के लिए तीन कारणों पर भरोसा कर रहा है। एक, सामाजिक समीकरण। दूसरा, महिलाओं के लिए कल्याणकारी लाभ, खासकर दस हजारी योजना और तीसरा, नीतीश कुमार का व्यक्तिगत प्रभाव। दूसरी ओर, सात दलों के गठबंधन वाले महागठबंधन का मुद्दा भले ही रोजगार और बदलाव पर केंद्रित रहा हो, लेकिन जीत इस बात पर निर्भर करेगी कि प्रमुख पार्टी राजद अपने मुसलिम-यादव वोट आधार से आगे बढ़कर मतदाताओं को रिझा सकी है या नहीं। इसी प्रयास के तहत राजद ने विकासशील इंसान पार्टी (वीआइपी) को अपने निषाद आधार के साथ, तथा नई भारतीय समावेशी पार्टी (आइआइपी) को अपने साथ जोड़ा, जिसका दावा है कि उसे तांती-पनवाड़ी लोगों के बीच समर्थन प्राप्त है। महागठबंधन में तेजस्वी का चेहरा है, जो अपने दम पर एक मजबूत नेता माने जा रहे हैं। चुनाव को तीसरा कोण बनाने में जुटे प्रशांत किशोर ने नौकरियों, प्रवासन, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल को अपनी पार्टी का केंद्रीय मुद्दा बनाया।

बिहार विधानसभा की 243 सीटों के चुनाव परिणाम शुक्रवार को घोषित किए जाएंगे। मतों की गणना सुबह आठ बजे से शुरू होगी। इसके लिए कड़े सुरक्षा बंदोबस्त किए गए हैं। निर्वाचन आयोग के मुताबिक डाक मतपत्रों से गणना शुरू होगी। 243 मतगणना पर्यवेक्षकों और उम्मीदवारों या उनके एजंटों की उपस्थिति में 243 निर्वाचन अधिकारी (आरओ) मतगणना करेंगे।

इस बार कुल 12 राष्ट्रीय दलों के उम्मीदवारों समेत 2616 उम्मीदवार मैदान में हैं। आयोग के मुताबिक राज्य में 67.13 फीसद मतदान हुआ, जो कि 1951 के बाद अब तक सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त आयोग को 38 जिलों में से कहीं भी पुनः मतदान कराने के संबंध में भी कोई अपील प्राप्त नहीं हुई। आयोग ने कहा कि 1800 मतगणना एजंट की मदद ली जाएगी।

डाक मतपत्रों के बाद साढ़े आठ बजे से ईवीएम के मतों की गणना होगी। आंकड़ों में यदि किसी गड़बड़ी का संकेत **बाकी पेज ८ पर**

अधिकारियों को दिल्ली से मिल रहे निर्देश, निष्पक्षता सुनिश्चित करे आयोग : तेजस्वी पेज 10

पटना के एएन कालेज मतगणना केंद्र के बाहर चौकस सुरक्षाकर्मी।

पहल | अमेरिका की मंत्री ने कहा, सख्त जांच के बाद जारी होंगे वीजा, सुनिश्चित करेंगे कि इस देश में आने वाले लोगों के पास सही और उचित वजह हो

अमेरिका एच-1 बी वीजा की प्रक्रिया जारी रखेगा

वाशिंगटन, एजेंसी। राष्ट्रपति ट्रंप के एच-1बी वीजा का बचाव करने के एक दिन बाद गृह सुरक्षा मंत्री क्रिस्टी नोएम ने कहा कि अमेरिका इन वीजा कार्यक्रमों का उपयोग जारी रखेगा। उन्होंने कहा कि ट्रंप प्रशासन के दौरान अधिक विदेशी लोगों को अमेरिकी नागरिकता मिली है।

नोएम ने स्थानीय मीडिया को दिए गए अपने एक साक्षात्कार में बताया, 'हम अपने वीजा कार्यक्रमों का इस्तेमाल जारी रखेंगे। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि इस देश में आने वाले लोगों के पास सही और उचित वजह हो, वे आतंकवादियों और आतंकी संगठनों के समर्थक नहीं हैं।' खास प्रतिभाओं की जरूरत: नोएम से पूछा गया था कि ट्रंप की हालिया टिप्पणी के मद्देनजर एच-1बी वीजा पर प्रशासन का क्या रुख है। ट्रंप ने कहा था कि अमेरिका को दुनिया भर से प्रतिभाओं को लाना होगा क्योंकि देश में 'कुछ खास प्रतिभाएं' नहीं हैं। उन्होंने कहा कि तकनीकी क्षेत्रों में अमेरिकियों को प्रशिक्षित करने के लिए विदेशी विशेषज्ञों की जरूरत है। गृह सुरक्षा मंत्री ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह उल्लेखनीय है... ट्रंप प्रशासन के दौरान हमने वीजा कार्यक्रमों, ग्रीन कार्ड और अन्य प्रक्रियाओं को तेज कर पारदर्शिता और विश्वसनीयता लाए हैं।

बाइडन पर आरोप लगाए

नोएम ने पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन पर आरोप लगाया कि उन्होंने 'हजारों आतंकियों' को देश में घुसने दिया और शरण व वीजा कार्यक्रमों का दुरुपयोग किया। नोएम ने कहा, 'ट्रंप ने सभी खामियों को सुधारा है। वह दूरदर्शी नेता हैं और इतिहास में सबसे महान राष्ट्रपति के रूप में याद किए जाएंगे।'

विदेशी कर्मी अमेरिकियों को प्रशिक्षित करें : बेसेंट

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन। अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चाहते हैं कि कुशल विदेशी कर्मी अमेरिकियों को प्रशिक्षित करें और अपने देश लौट जाएं। उनका यह बयान ट्रंप द्वारा एच-1बी वीजा कार्यक्रम का बचाव करने के एक दिन बाद आया है। बेसेंट ने बुधवार को फॉक्स न्यूज को दिए साक्षात्कार में कहा कि यहां राष्ट्रपति का दृष्टिकोण विदेशी कामगारों को लाना है, जहां ये नौकरियां थीं, जिनके पास कौशल है। अमेरिकी कामगारों को प्रशिक्षित करने के लिए तीन, पांच, सात साल लगेंगे, फिर वे स्वदेश लौट जाएंगे।

अमेरिका में 43 दिन लंबा शटडाउन खत्म

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार रात को एक सरकारी वित्त पोषण विधेयक पर हस्ताक्षर कर दिए, जिससे 43 दिन लंबा सरकारी शटडाउन समाप्त हो गया। वित्त पोषण विधेयक को प्रतिनिधि सभा में 209 के मुकाबले 222 मतों से पारित किया गया, जबकि सीनेट ने इसे पहले ही मंजूरी दे दी थी। इस शटडाउन के कारण संघीय कर्मचारियों को वेतन न मिलने की वजह से आर्थिक संकट झेलना पड़ा, यात्रियों को हवाई अड्डों पर दिक्कतें आयीं और कई खाद्य बैंकों पर लंबी कतारें लग गईं। इसने वाशिंगटन में राजनीतिक विभाजन को और गहरा कर दिया। ट्रंप ने डेमोक्रेट्स पर दबाव बनाने के लिए कई एकतरफा कदम उठाए जैसे परियोजनाएं रद्द करना और कर्मचारियों को बर्खास्त करने की कोशिश।

Hindustan Page No-15

ऋण गारंटी: निर्यातकों को रियायती दर पर ₹50 करोड़ तक मिलेंगे

नई दिल्ली, एजेंसी। ऋण गारंटी योजना के तहत निर्यातक रियायती दर पर 50 करोड़ रुपये तक का अतिरिक्त कर्ज प्राप्त कर सकते हैं। सरकार ने बुधवार को इस योजना की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य निर्यातकों को दी जाने वाली ऋण सुविधा के लिए 100 प्रतिशत गारंटी प्रदान करना है।

इसके तहत, निर्यातक स्वीकृत निर्यात कार्यशील पूंजी सीमा के 20 प्रतिशत तक का उपयोग कर सकते हैं, जबकि अप्रत्यक्ष निर्यातकों को कार्यशील पूंजी सीमा का 20 प्रतिशत तक मिलेगा, जो 50 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होगा। दिशानिर्देश जारी होने की तिथि पर ब्याज दर मौजूदा सुविधा से एक प्रतिशत कम होगी। ऋण की अवधि पहली वितरण की तिथि से चार वर्ष होगी और इसमें एक वर्ष की ऋण लौटाने को लेकर स्थगन अवधि शामिल होगी। यह योजना एनसीजीटीसी के दिशानिर्देश जारी करने की तिथि से 31 मार्च, 2026 तक या 20,000 करोड़ रुपये तक की गारंटी जारी होने तक, जो भी पहले हो, लागू रहेगी।

निर्यातकों से जुड़े फैसले आत्मनिर्भर बनाएंगे: मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि निर्यात से संबंधित केंद्रीय मंत्रिमंडल के फैसले वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार लाएंगे और आत्मनिर्भरता के सपने को साकार करने में मदद करेंगे। बुधवार को निर्यात संवर्धन मिशन और निर्यातकों के लिए ऋण गारंटी योजना को मंजूरी दी गई थी। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट में लिखा, विश्व बाजार में 'मेड इन इंडिया' की गूंज और भी जोरदार होगी। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने निर्यात संवर्धन मिशन (ईपीएम) को मंजूरी दी है, जिससे निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होगा, एमएसएमई, पहली बार निर्यात करने वाले और श्रम-प्रधान क्षेत्रों को मदद मिलेगी। यह प्रमुख हितधारकों को एक साथ लाकर एक ऐसा तंत्र तैयार करेगा जो परिणाम-आधारित और प्रभावी हो।

इन प्रयासों से रोजगार के अवसर पैदा होंगे : शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा उच्च अमेरिकी टैरिफ से प्रभावित निर्यातकों की मदद के लिए 45,000 करोड़ रुपये की दो योजनाओं को मंजूरी दिए जाने की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत के निर्यात क्षेत्र को एक नई सहायता प्रणाली से मजबूती मिली है। इस क्षेत्र को और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया जाएगा और साथ ही युवाओं के लिए रोजगार के व्यापक अवसर पैदा किए जाएंगे।

देश के निर्यात क्षेत्र में हर साल 18% तक बढ़ोतरी की उम्मीद

भारत का निर्यात क्षेत्र प्रतिवर्ष 12 से 18 प्रतिशत तक बढ़ोतरी दर्ज कर सकता है। विशेषज्ञ और निर्यात से जुड़े संगठन मानते हैं कि प्रोत्साहन मिशन के तहत भारत को नए बाजारों को खोज करने और उन बाजारों में आपूर्ति श्रृंखला बनाने में मदद मिलेगी।

इंजीनियरिंग एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के चेयरमैन पंकज चड्ढा कहते हैं कि निर्यात प्रोत्साहन मिशन और 20 हजार करोड़ रुपये की अतिरिक्त क्रेडिट गारंटी योजना के जरिए पूरे निर्यात क्षेत्र को लाभ मिलेगा।

ऐसे में लंबे समय में पूरे निर्यात क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा। फियो के अध्यक्ष एस सी रल्हन का कहना है कि निर्यात संवर्धन मिशन भारत के व्यापार क्षेत्र के प्रति व्यावहारिक और दूरदर्शी दृष्टिकोण को दर्शाता है। ईपीएम के तहत, कपड़ा, चमड़ा, रत्न एवं आभूषण, इंजीनियरिंग सामान और समुद्री उत्पादों को निर्यात बढ़ाने में मदद मिलेगी, जो बीते कुछ माह में वैश्विक टैरिफ वृद्धि से प्रभावित हुए हैं।

Hindustan Page No-13

जीनोम सिक्वेंसिंग में डेंगू का नया मिक्स वेरिएंट मिला

डेंगू का डंक

- मिक्स वेरिएंट से मरीज को ठीक होने में लग रहा 10 दिन से अधिक का समय
- नए वेरिएंट के मरीज सबसे अधिक कंकड़बाग और संदलपुर इलाके में मिले

पटना, प्रधान संवाददाता। डेंगू के 70 मरीजों के ब्लड सैंपल की जीनोम सिक्वेंसिंग की गई। जांच रिपोर्ट में चौकाने वाली बात सामने आयी है। जीनोम सिक्वेंसिंग के बाद डेंगू के मरीजों में मिक्स वेरिएंट मिला है।

आईजीआईएमएस के चिकित्सा अधीक्षक डॉ.मनीष मंडल ने बताया कि पटना में अबतक डेंगू के मरीजों में एकल वेरिएंट ही मिलता था। जीनोम सिक्वेंसिंग के बाद मिक्स वेरिएंट मिला है, जो पटना शहर के लिए नई बात है। इससे मरीजों को चिंता करने की जरूरत नहीं, क्योंकि यह मिक्स वेरिएंट सिर्फ मरीजों को परेशान करता है। मिक्स वेरिएंट के कारण ही डेंगू के बीमारी से ठीक होने से 10 दिन से अधिक का समय लग रहा है।

आईजीआईएमएस के इम्यूनोलॉजी लैब में पिछले दो महीने से डेंगू के 70 मरीजों के ब्लड सैंपल की जांच की गई। जांच के लिए लिए गए सभी ब्लड सैंपल पटना शहर के ही है। जांच रिपोर्ट से यह भी पता चला कि डेंगू का मिक्स वेरिएंट के सबसे अधिक मरीज कंकड़बाग और संदलपुर में मिले हैं। मिक्स वेरिएंट के दोनों हॉट स्पॉट हैं। डॉ.मनीष मंडल ने बताया कि शुक्रवार को आई रिपोर्ट में चार मिक्स वेरिएंट मिले हैं। पहले एकल वेरिएंट में डीईएनवी 1-15, डीईएनवी2-13 और डीईएनवी3-19 एकल वेरिएंट ही मिलते थे। जीनोम सिक्वेंसिंग के बाद एकल वेरिएंट आपस में मिलकर मिक्स वेरिएंट बन गए है।

मिक्स वेरिएंट से शरीर में हो रही कमजोरी

डॉ.मनीष मंडल ने बताया कि मरीजों को पूर्ण रूप से ठीक होने में 10 दिन से अधिक समय लग रहा है। मरीज को बुखार ठीक होने के बाद भी पूरे बदन में दर्द, सिरदर्द और कमजोरी हो रही है। मिक्स वेरिएंट का इलाज भी एकल वेरिंट की तरह है। मिक्स वेरिएंट से मरीज की मौत नहीं हो रही है। बता दें कि जीनोम सिक्वेंसिंग के लिए एनएमसीएच प्रशासन की ओर से बुधवार को आईजीआईएमएस प्रशासन से बातचीत भी की गई थी। गुरुवार को मरीजों का सैंपल आईजीआईएमएस भेजा गया था।

राजधानी में वायु गुणवत्ता सूचकांक रहा 156, दूसरे दिन भी हाजीपुर की हवा सूबे में रही सबसे खराब

चिंता : पटना सहित 10 शहरों की हवा हुई प्रदूषित

पटना, मुख्य संवाददाता। पटना सहित राज्य के दस शहरों की हवा गुरुवार को प्रदूषित रही। पटना का वायु गुणवत्ता सूचकांक जहां 156 रहा वहीं हाजीपुर लगातार दूसरे दिन राज्यभर में प्रदूषित हवा वाले शहरों में शीर्ष पर रहा।

यहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 192 दर्ज किया गया। आरा की हवा सबसे स्वच्छ रही, जहां एक्यूआई 56 दर्ज किया गया। पटना के समनपुरा इलाके में प्रदूषकों की अधिकता की वजह से राजधानी की हवा के प्रदूषण के औसत आंकड़े बढ़े रह रहे हैं। इस इलाके में निर्माण कार्यों की वजह से हवा में प्रदूषक ज्यादा पहुंच रहे हैं। यहां गुरुवार को एक्यूआई 186 रहा, जबकि पटना के औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक से अधिक है। राज्य के प्रदूषित हवा वाले अन्य शहरों में भागलपुर, बेतिया, बिहारशरीफ, गया, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया और औरंगाबाद शामिल हैं। गुरुवार को आरा में 56, मोतिहारी 98, राजगीर में 92 और समस्तीपुर 78 में एक्यूआई दर्ज किया गया।

प्रमुख शहरों का हाल

शहर	एक्यूआई
हाजीपुर	192
भागलपुर	110
औरंगाबाद	150
बेतिया	141
बिहारशरीफ	147
बक्सर	119
गया	174
मुजफ्फरपुर	136
पटना	156
पूर्णिया	152

बढ़ाया गया पानी का छिड़काव

हवा में धूल कणों की अधिकता बढ़ने की वजह से राजधानी के प्रमुख सड़कों पर वाटर स्प्रिंकलर मशीनों से पानी का छिड़काव बढ़ा दिया गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि पटना सहित राज्य के अधितकर हिस्से में अभी हवा की गति तेज है इस वजह से प्रदूषकों का जमावड़ा कम हो रहा है। आने वाले हफ्तो में जब हवा की गति सतह पर कम होगी तो प्रदूषण की सघनता बढ़ेगी, जिससे समस्या और बढ़ सकती है।

सूबे में बन रहे प्रदूषण के पांच माइक्रो एयरशेड

■ चंदन द्विवेदी

पटना। सूबे में प्रदूषण के पांच माइक्रो एयरशेड बन रहे हैं। इन प्रदूषकों के जमा होने के पीछे मानवीय कारकों के बजाय राज्य की प्राकृतिक और मौसमी परिस्थितियां अधिक जिम्मेदार हैं।

आईआईटी कानपुर की ताजा रिपोर्ट में यह बात सामने आई है। जाड़ा, गर्मी और बरसात इन तीनों मौसमों में वातावरणीय परिस्थितियों के बीच प्रदूषकों की स्थिति के अध्ययन के बाद यह रिपोर्ट जारी की गई है। रिपोर्ट में इस बात का भी जिक्र है कि मानसून से पहले की अवधि में वातावरण में सबसे कम प्रदूषण रहता है, जबकि मानसून के बाद वातावरण में धूल कण की अधिकता बढ़ने लगती है। जाड़े की अवधि में यह राज्य में कई जगहों पर खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है।

- आईआईटी कानपुर ने दस दिन पहले जारी की है शोध आधारित रिपोर्ट
- बिहार में प्रदूषण के लिए प्राकृतिक और मौसमी परिस्थितियां जिम्मेदार

स्थान बदलते रहते हैं प्रदूषक : डीके शुक्ला

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के चेयरमैन डीके शुक्ला ने इस रिपोर्ट के हवाले से यह बताया कि प्रदूषक एक जगह जमा न होकर वातावरण में स्थान बदलते रहते हैं, लेकिन पांच ऐसी जगहें चिह्नित हुई हैं, जहां प्रदूषक तत्व घनीभूत होते हैं। इन्हें माइक्रो एयरशेड नाम दिया गया है। उन्होंने कहा कि इनमें पीएम 2.5 और पीएम 10 पार्टिकल की अधिकता पाई गई है।

बिहार चुनावः आज सुबह आठ बजे से सभी 243 सीटों पर मतगणना, 10.30 बजे से आएंगे रुझान

किसका होगा राजतिलक

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। शुक्रवार को आने वाला जनादेश तय करेगा कि बिहार में किसका राजतिलक होगा। 39 दिनों के सत्ता संग्राम में दो बड़े गठबंधनों एनडीए और 'इंडिया' ने पूरी ताकत झोंकी। जनसुराज ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। बड़ी संख्या में निर्दलीय (926) और बागियों ने भी दमखम लगाया।

वार, प्रहार और पलटवार में भाषा की मर्यादा भी टूटी। तीखे प्रहार सत्ता संग्राम के हथियार बने। मौसम ने भी अलग-अलग तेवर दिखाए। कभी सुहाना, कभी बारिश तो कभी तीखी धूप। पर, इसकी परवाह किये बगैर राजनेताओं ने बाजी अपने पक्ष में करने के लिए दिन-रात एक कर दिया।

बिहार के मतदाताओं ने भी लोकतंत्र के महापर्व को सलामी दी। आजादी के बाद सबसे अधिक मतदान का कीर्तिमान रचा (67.14 फीसदी)। महिलाएं दो कदम आगे निकल गईं। उन्होंने पुरुषों से 8.82 फीसदी अधिक मतदान किया। लम्बी कतारों ने बिहार में महिला सशक्तीकरण की मिसाल पेश की। उत्साह और बुलंदी के साथ मतदान करने निकली महिलाओं ने इसबार कुछ छुपाया नहीं। किस मुद्दे पर वह वोट कर रही हैं, यह भी खुलकर बताया।

बहरहाल, अत्यधिक मतदान ने जहां उम्मीद जताई है, वहीं दिल की धड़कनें भी बढ़ाई हैं। एनडीए, 'इंडिया' और जनसुराज, सभी के नेताओं ने हर क्षेत्र से फीडबैक लेकर आश्वस्त होना चाहा। खैर, जनादेश 2025 क्या है, यह आज पता चलेगा।

बिहार विधानसभा चुनाव की मतगणना की तैयारी पूरी हो चुकी है। शुक्रवार को 2616 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला होगा। बैलेट पेपर की गिनती 8 बजे से शुरू होगी। जबकि, 8.30 बजे से ईवीएम के वोटों की गिनती प्रारंभ होगी। अगले दो घंटे यानी 10.30 बजे से मतगणना के रुझान एवं परिणाम आने शुरू हो जाएंगे। सबसे पहले बरबीघा सीट का रुझान व परिणाम सामने आएगा। वहां सबसे कम 275 बूथों पर ही मतदान हुआ है। इनके अतिरिक्त हायाघाट, गया टाउन, गौरा बौराम एवं कल्याणपुर सीटों के रुझान व परिणाम आ सकते हैं। वहीं, सबसे देर से हिसुआ का रुझान एवं परिणाम आएगा। वहां सर्वाधिक 485 बूथों के वोटों की गिनती होगी।

राज्यभर के 46 केन्द्रों पर होगी गिनती: मतगणना के लिए विधानसभावार हरेक हॉल में ईवीएम के वोट गिने जाएंगे। इसके लिए 14-14 टेबुल लगाए जाएंगे। 24-30 राउंड में वोटों की गिनती होगी। वहीं, हरेक हॉल में 500 बैलेट पेपर पर एक टेबुल लगाया जाएगा। राज्य के सभी 243 विधानसभा क्षेत्रों के वोटों की गिनती के लिए कुल 46 मतगणना केंद्र बनाए गए है। वहीं, पूरे राज्य में करीब 19 हजार मतगणना कर्मियों को मतगणना कार्य में लगाया गया है। इस चुनाव में 7,45,26,858 मतदाताओं में 1951 से अबतक का सबसे अधिक 67.13 प्रतिशत मतदान हुआ है। सुबह सात बजे से सभी कर्मियों की तैनाती कंट्रोल रूम में होगी जो मतगणना कार्य संपन्न होने तक वहां तैनात रहेंगे। मतगणना कार्य की निगरानी के लिए अधिकारियों को तीन से चार जिलों की जिम्मेवारी सौंपी गई है।

➤ देखें P 2,3,4

पटना हाईस्कूल में गुरुवार की शाम मतगणना कर्मियों को प्रशिक्षण देते चुनाव अधिकारी।

यहां देखें परिणामः

https://results.eci.gov.in

मतगणना के आंकड़े इस लिंक से भी शुक्रवार को देखे जा सकते हैं। राज्य भर में 4,372 मतगणना टेबलों पर वोटों की गिनती होगी। सभी सीटों पर 243 निर्वाची पदाधिकारी एवं सहायक निर्वाची पदाधिकारी, मतगणना प्रेक्षक एवं उम्मीदवार या उनके मतगणना एजेंट तैनात रहेंगे। बिहार के सीईओ विनोद सिंह गुंजियाल ने सभी कर्मियों को आयोग के निर्देशों का पालन करने का निर्देश दिया है। किसी भी मतगणना केंद्र में कोई समस्या आने पर तत्काल समाधान राज्यस्तरीय कंट्रोल रूम से किया जाएगा।

26 सौ 16 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला होगा

- **सबसे पहले बरबीघा और सबसे देर से हिसुआ सीट का रुझान-परिणाम आएगा**

"बिहार की जनता ने एनडीए को फिर से सत्ता सौंपने ने लिए मतदान किया है। अधिकारियों पर दबाव बनाने के लिए नेता विपक्ष बयान दे रहे हैं।"
–दिलीप जायसवाल, प्रदेश अध्यक्ष भाजपा

"महागठबंधन को स्पष्ट बहुमत मिलने जा रहा है। बिहार की जनता ने बदलाव के लिए वोट किया। आयोग से निष्पक्ष मतगणना कराने का आग्रह है।"
–तेजस्वी यादव, नेता प्रतिपक्ष

नकेलः मतगणना में बाधा डाली तो कार्रवाई

राज्य सरकार ने शुक्रवार को सभी 38 जिला मुख्यालयों पर होने वाली मतगणना को लेकर कड़े इंतजाम किए हैं। डीजीपी विनय कुमार ने कहा कि मतगणना में किसी ने बाधा डाली तो सख्त कार्रवाई होगी।

नतीजेः मतों की गिनती 15 घंटे में पूरी होगी

मतगणना में एक राउंड की गिनती में औसतन 10 मिनट का समय लगेगा। एक विधानसभा क्षेत्र का चुनाव परिणाम आने में करीब ढाई से तीन घंटे का वक्त लगेगा। सभी 243 सीटों के चुनाव परिणाम हासिल करने में 14-15 घंटे का वक्त लगेगा।

निगरानीः कंट्रोल रूम पल-पल की रिपोर्ट लेगा

सभी 46 मतगणना केंद्रों में संचालित मतगणना का निगरानी राज्यस्तरीय नियंत्रण कक्ष से की जाएगी। इसके लिए राज्य स्तरीय कंट्रोल रूम में जिलों से लगातार फोन एवं फैक्स के माध्यम से अद्यतन रिपोर्ट प्राप्त किया जाएगा।

इस बार 10 फीसदी अधिक वोट पड़े

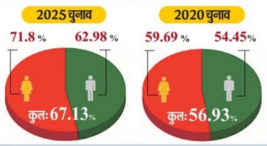

2020 : कौन कितनी सीटों पर लड़ा और जीता

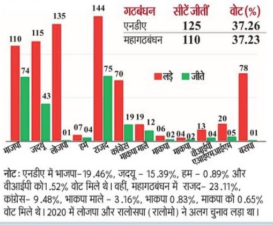

नोट : एनडीए में भाजपा-19.46%, जदयू - 15.39%, हम - 0.89% और वीआईपी को1.52% वोट मिले थे। वहीं, महागठबंधन में राजद- 23.11%, कांग्रेस- 9.48%, भाकपा माले - 3.16%, भाकपा 0.83%, माकपा को 0.65% वोट मिले थे। 2020 में लोजपा और रालोसपा (रालोमो) ने अलग चुनाव लड़ा था।

2025: किस दल के कितने प्रत्याशी

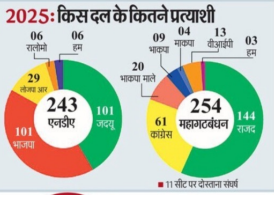

■ 11 सीट पर दोस्ताना संघर्ष

बिहार के मुख्यमंत्री

सबसे अधिक समय तक सीएम रहने का रिकॉर्ड नीतीश के नाम

आजादी के बाद राज्य में 23 मुख्यमंत्री हुए। श्रीकृष्ण सिंह राज्य के पहले मुख्यमंत्री थे। मौजूदा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का सर्वाधिक समय तक सीएम रहने का रिकॉर्ड है। वह 19 वर्षों से अधिक समय से मुख्यमंत्री हैं। यही नहीं वे आठ बार मुख्यमंत्री बन चुके हैं। यह भी सबसे अधिक है। उन्होंने दोनों ही मामलों में उन्होंने श्रीकृष्ण सिंह का रिकॉर्ड तोड़ा। श्रीकृष्ण सिंह 17 साल 51 दिन तक मुख्यमंत्री रहे, जबकि नीतीश कुमार 19 साल 110 दिनों से सीएम हैं। सतीश प्रसाद सबसे कम समय तक मुख्यमंत्री रहे। वे मात्र पांच दिनों तक सीएम रहे।

नीतीश कुमार

03.03.2000– 10.03.2000
24.11.2005– 25.11.2010
26.11.2010– 19.05.2014
22.02.2015– 19.11.2015
20.11.2015– 26.07.2017
27.07.2017–12.11.2020
16.11.2020– 09.08.2022
10.08.2022– 28.01.2024
28.01.2024 से अबतक

जीतनराम मांझी

कार्यकाल
20.05.2014–
22.02.2015

सत्येन्द्र नारायण सिन्हा

कार्यकाल
11.03.1989–
06.12.1989

भागवत झा आजाद

कार्यकाल
14.02.1988–
10.03.1989

चन्द्रशेखर सिंह

कार्यकाल
14.08.1983–
12.03.1985

डॉ. जगन्नाथ मिश्रा

कार्यकाल :
11.04.1975–
30.04.1977,
08.06.1980– 14.08.1983 और
06.12.1989– 10.03.1990

कर्पूरी ठाकुर

कार्यकाल
22.12.1970–
02.06.1971 और
24.06.1977– 21.04.1979

भोला पासवान शास्त्री

कार्यकाल :
22.03.1968 से
29.061968,
22.06.1969 से 04.07.1969
और 02.06.1971 से 09.01.1971

बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल

कार्यकाल
01.02.1968–
22.03.1968

महामाया प्रसाद सिंह

कार्यकाल
05.03.1967–
28.01.1968

विनोदानंद झा

कार्यकाल
18.02.1961–
02.10.1963

श्रीकृष्ण सिंह

कार्यकाल
29.04.1952–
31.01.1961

राबड़ी देवी

25.07.1997–
11.02.1999,
09.03.1999– 02.03.2000,
11.03.2000– 06.03.2005

लालू प्रसाद

10.03.1990–
03.04.1995 और
04.04.1995– 25.07.1997

बिन्देश्वरी दूबे

कार्यकाल
12.03.1985–
13.02.1988

रामसुंदर दास

कार्यकाल :
21.04.1977–
17.02.1980

अब्दूल गफूर

कार्यकाल :
02.07.1973–
11.04.1975

केदार पांडेय

कार्यकाल
19.03.1972–
02.07.1973

दरोगा प्रसाद राय

कार्यकाल :
16.02.1970–
22.12.1970

सरदार हरिहर सिंह

कार्यकाल :
26.02.1969–
22.06.1969

सतीश प्रसाद

कार्यकाल
28.01.1968–
01.02.1968

कृष्णवल्लभ सहाय

कार्यकाल
02.10.1963–
05.03.1967

दीपनारायण सिंह

कार्यकाल
01.02.1961–
18.02.1961

- श्रीकृष्ण सिंह 17 साल 51 दिन तक मुख्यमंत्री रहे
- सतीश प्रसाद सबसे कम समय तक मुख्यमंत्री रहे

जी-20 देशों में सबसे तेज बढ़ने वाली आर्थिकी बना रहेगा भारत

नई दिल्ली, आइएएनएस: वैश्विक रेटिंग एजेंसी मूडीज ने अपनी ताजा 'ग्लोबल मैक्रो आउटलुक रिपोर्ट 2026-27' में कहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से उच्च टैरिफ लगाए जाने के बावजूद भारत जी20 देशों में 6.5 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा। भारत की वृद्धि को मजबूत बुनियादी ढांचा निवेश, मजबूत घरेलू उपभोक्ता मांग और निर्यात विविधीकरण से मदद मिलेगी।

रिपोर्ट में कहा है कि 50 प्रतिशत अमेरिकी टैरिफ का सामना कर रहे निर्यातकों ने अपने निर्यात को फिर से पटरी पर लाने में सफलता हासिल कर ली है। सितंबर में कुल निर्यात 6.75 प्रतिशत बढ़ा है, जबकि अमेरिका को भेजे गए सामान में 11.9 प्रतिशत की गिरावट आई है। मूडीज ने आरबीआइ की मौद्रिक नीति की भी प्रशंसा की है, जिसने देश को स्थिर विकास पथ पर बनाए रखा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में आरबीआइ ने अक्टूबर में अपनी रेपो दर को स्थिर रखा है। यह दर्शाता है कि आरबीआइ अपनी नीति के प्रति सतर्क है क्योंकि महंगाई कम है और विकास मजबूत है।

सकारात्मक निवेशक भावना द्वारा संचालित मजबूत अंतरराष्ट्रीय पूंजी प्रवाह ने बाहरी झटकों को कम करने और तरलता बनाए रखने में मदद की है। हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि घरेलू मांग प्राथमिक विकास इंजन बनी हुई है, जबकि निजी क्षेत्र अभी भी बड़े पैमाने पर व्यावसायिक निवेश के लिए पूरी तरह से भरोसा हासिल नहीं कर पाया है।

2.5 से 2.6 प्रतिशत रहेगी वैश्विक विकास दर : रिपोर्ट में वैश्विक विकास स्थिर लेकिन कमजोर रहने की संभावना जताई गई है। इसमें 2026 और 2027 में वैश्विक विकास दर 2.5 से 2.6 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान जताया गया है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं के लगभग 1.5 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है, जबकि उभरते बाजारों में 4 प्रतिशत की वृद्धि होने की संभावना है। अमेरिका धीमी लेकिन स्थिर गति से बढ़ रहा है। चीन की वृद्धि दर 2025 में पांच प्रतिशत से घटकर 2027 तक 4.2 प्रतिशत होने की उम्मीद है।

वैश्विक रेटिंग एजेंसी मूडीज ने ताजा रिपोर्ट में कहा, भारत को मजबूत घरेलू उपभोक्ता मांग और निर्यात विविधीकरण का होगा लाभ

रेपो रेट में एक और कटौती कर सकता है आरबीआइ

नई दिल्ली, आइएएनएस: रेटिंग एजेंसी क्रिसिल और इक्रा के अर्थशास्त्रियों ने गुरुवार को अनुमान जताया कि आरबीआइ दिसंबर में होने वाली मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) बैठक में एक और कटौती कर सकता है। इस वर्ष अक्टूबर में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआइ) के आधार पर महंगाई 1.4 प्रतिशत से घटकर 0.3 प्रतिशत पर आ गई है। यह 2011-12 की आधार श्रृंखला में सबसे निचला स्तर है।

Dainik Jagaran Page No-13

जनादेश से बदलेगी दलित राजनीति की धारा

प्रशांत ● जागरण

भागलपुर : बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की राजनीति के केंद्र में एक बार फिर से दलित राजनीति रही। दलित राजनीति को साधने के लिए एनडीए और महागठबंधन ने पूरी ताकत झोंक दी। दोनों गठबंधन के अंदर दल भी टिकट वितरण के दौरान अधिक से अधिक सुरक्षित सीटों की मांग कर रहे थे, ताकि दलित समुदाय में उनकी पैठ मजबूत हो सके। एनडीए में सबसे अधिक छह सीटों पर जदयू ने उम्मीदवार उतारे। तीन पर भाजपा और एक सीट पर हम के उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे। दूसरी तरफ महागठबंधन में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित छह सीटों पर राजद और चार पर कांग्रेस ने उम्मीदवार उतारे। अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों पर भी मतदान ने इस बार बंपर वोटिंग की। सिकंदर सीट पर 64.44, धोरैया में 71.74, सिंहेश्वर में 69.46, सोनवर्षा में 68.09, रानीगंज में 67.14, कोढ़ा में 71.12 प्रतिशत मतदाताओं ने मतदान किया। सबसे खास बात यह रही कि इनमें अधिकांश सीटों पर महिलाओं को मतदान प्रतिशत 70 प्रतिशत के भी पार कर गया। बिहार में दलित राजनीति के दो बड़े चेहरे लोजपा रामविलास के अध्यक्ष चिराग पासवान और हम के संरक्षक जीतनराम मांझी एनडीए के साथ हैं। ऐसे में एनडीए का मानना है कि अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों में से अधिकांश का परिणाम उनके पक्ष में आएगा। दस में से चार सुरक्षित सीट पर लड़ने वाली कांग्रेस इसी बहाने एक बार फिर से अपने परंपरागत दलित वोट बैंक को अपने पाले में करने की कोशिश में है। वहीं, राजद ने भी सुरक्षित सीटों को जीतने के लिए पूरा दम लगाया। ऐसे में 2025 का चुनाव परिणाम राज्य में दलित राजनीति को नए सिरे से परिभाषित कर देगा। इधर, टीएमबीयू के मारवाड़ी कालेज के राजनीति विज्ञान के वरीय असिस्टेंट प्रोफेसर संजय जायसवाल ने कहा कि 2025 के बिहार विधानसभा का चुनाव परिणाम का असर निश्चित रूप से दलित राजनीति पर पड़ेगा। दलित भी अब एग्रेसिव मतदान करते हैं।

ये हैं अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटें

खगड़िया	अलौली
जमुई	सिकंदरा
बांका	धोरैया
मधेपुरा	सिंहेश्वर
सहरसा	सोनवर्षा
अररिया	रानीगंज
भागलपुर	पीरपैंती
कटिहार	कोढ़ा
पूर्णिया	बनमनखी
सुपौल	त्रिवेणीगंज

Dainik Jagaran Page No-11

नोटा ने बिगाड़ दिया था गणित, इस बार भी गुणा-भाग

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : ईवीएम के सबसे अंतिम में नोटा का बटन होता है। इसका मतलब नन आफ द एबव यानी उपरोक्त में से कोई नहीं होता है। सीधे शब्दों में कहा जाए तो कोई भी प्रत्याशी पसंद नहीं। चुनाव आयोग के इस विकल्प का उपयोग ऐसे मतदाता करते हैं जो किसी न किसी रूप में नाराज होते हैं और उन्हें कोई प्रत्याशी पसंद नहीं होता। समस्तीपुर में पिछले दो विधानसभा चुनाव में नोटा पर कुल 82 हजार 458 बटन दबे। वर्ष 2015 के विधानसभा चुनाव में जिले के कुल 52 हजार, 610 मतदाताओं ने नोटा का इस्तेमाल किया था। 2020 के विधानसभा चुनाव में कुल 29 हजार 848 मत नोटा में गिरे। इससे कितने ही प्रत्याशियों का खेल नोटा ने भी बिगाड़ा। शुक्रवार को होने वाली मतगणना के परिणाम पर प्रत्याशी, समर्थक और मतदाता की नजर है। शुक्र का यह दिन किसके लिए खुशनुमा और किस पर भारी पड़ता है यह मतगणना का परिणाम ही बताएगा।

2015 के मुकाबले समस्तीपुर में 2020 में 22,762 नोटा मत में थी गिरावट

2015 में हसनपुर में सबसे ज्यादा नोटा का प्रयोग हुआ था, 7471 पड़े थे मत

वर्ष 2013 में लागू हुआ था नोटा का विकल्प

भारत में नोटा का विकल्प पहली बार वर्ष 2013 में लागू हुआ था। दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, मिजोरम आदि के विधानसभा चुनाव में वर्ष 2013 में नोटा से मत डालने का विकल्प ईवीएम में दिया गया। उसके बाद देश के अन्य राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव में भी इसे लागू किया गया। बिहार में 2015 के चुनाव से नोटा का विकल्प मतदाताओं के सामने है।

दो चुनावों में कम हुई संख्या: पहली बार जब बिहार में चुनाव आयोग द्वारा वर्ष 2015 में नोटा का प्रयोग शुरू किया गया था तो इसको लेकर मतदाताओं में क्रेज दिखा। समस्तीपुर में हसनपुर विधानसभा में सबसे ज्यादा नोटा का प्रयोग हो गया था। यहां पर सबसे अधिक 7,471 मतदाता ने नोटा का बटन दबाया था। जिले के 10 विधानसभा क्षेत्रों में 2015 की तुलना में 2020 में नोटा दबाने वालों की संख्या घटी है, जबकि कुल मतदान प्रतिशत बढ़ा। बारिसनगर विधानसभा में 2015 में सबसे अधिक 9,551 मतदाताओं ने नोटा का प्रयोग किया था, जो 2020 में घटकर 2,632 पर पहुंच गया। वहीं, 2020 में मोहिउद्दीननगर विधानसभा में मात्र 546 वोट नोटा को मिले, जो जिले में सबसे कम था। समस्तीपुर शहरी में 2015 में 1,070 मतदाता ने नोटा का बटन दबाया था, वहीं 2020 में यह संख्या बढ़कर 1,837 रह गई।

2015 के मुकाबले 2020 में नोटा के मत में आई गिरावट

2015 के मुकाबले 2020 के विधानसभा चुनाव में नोटा पर कम बटन दबे थे। जिले के 10 सीट पर 2015 में जहां 52 हजार 610 मत नोटा में गिरे थे, वह 2020 के चुनाव में घटकर 29 हजार 848 पर सिमट गया। इस तरह से 2015 के मुकाबले 2020 के चुनाव में 22 हजार 762 नोटा के मत में गिरावट आई। अब देखना रोचक होगा कि इस बार यानी 2025 के चुनावी परिणाम में नोटा कितने पर भारी पड़ता है।

डाटा गिरी

Dainik Jagaran Page No-11

सौराष्ट्र तट पर आइएनएस विक्रांत पर तीनों सेनाओं के सैन्य अभ्यास त्रिशूल की समीक्षा के दौरान (बाएं से) दक्षिण पश्चिमी वायु कमान के एयर मार्शल नागेश कपूर, दक्षिणी कमान के लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ और पश्चिमी नौसेना कमान के वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन। प्रेट्र

त्रिशूल अभ्यास में दिखी भारत की शक्ति

पोखंदर, प्रेट्र : भारत ने त्रिशूल सैन्य अभ्यास में शक्ति प्रदर्शन किया। दो सप्ताह तक चला यह अभ्यास संयुक्त जल-थल- अभ्यास - एम्फेक्स 2025 के साथ समाप्त हुआ। आपरेशन सिंदूर के बाद यह तीनों सेनाओं का सबसे बड़ा सैन्य अभ्यास था। अभ्यास के दौरान तीनों सेनाओं के शीर्ष कमांडर विमानवाहक पोत आइएनएस विक्रांत पर भी सवार हुए और इस सैन्य अभियान की समीक्षा की। कमांडरों ने कहा कि त्रिशूल ने बेहतरीन तालमेल में नए मानक स्थापित किए हैं और इससे सेनाएं कहीं अधिक मजबूत हुई हैं। वायुसेना ने इस अभ्यास के दौरान लगभग 1,450 उड़ानें भरीं। थार रेगिस्तान से लेकर कच्छ तक, सेना, नौसेना और वायुसेना ने अभ्यास त्रिशूल के तहत पिछले दो सप्ताह से कई उप-अभ्यासों में भाग लिया। वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन ने बताया कि इस अभ्यास में लगभग 30 हजार थलसेना के जवान, कई लड़ाकू विमान और नौसेना के लगभग 25 जहाज और पनडुब्बियां शामिल हुईं। विमानवाहक पोत आइएनएस विक्रांत भी इसका हिस्सा था।

Dainik Jagaran Page No-13

अमेरिका में रिकार्ड 43 दिनों के व्यवधान के बाद शटडाउन खत्म

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सरकारी वित्त पोषण विधेयक पर हस्ताक्षर किए, डेमोक्रेट्स के लिए झटका है इस विधेयक को सीनेट की मंजूरी मिलना

न्यूयार्क टाइम्स से

- **ओबामाकेयर के लिए सब्सिडी बढ़ाने की मांग स्वीकार नहीं किया गया**
- **अमेरिका में हालात सामान्य होने में अभी कुछ और दिनों का करना होगा इंतजार**

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। (फाइल) एपी

> पिछले 43 दिनों से कांग्रेस में डेमोक्रेट्स ने अवैध विदेशियों के लिए अमेरिकी करदाताओं से सैकड़ों अरब डालर की जबरन वसूली करने के प्रयास में अमेरिका की सरकार को ठप कर दिया। आज, हम एक स्पष्ट संदेश दे रहे हैं कि हम जबरन वसूली के आगे कभी नहीं झुकेंगे।
> – **डोनाल्ड ट्रंप,** अमेरिकी राष्ट्रपति

वाशिंगटन : अमेरिका में रिकार्ड 43 दिनों का सबसे लंबा सरकारी शटडाउन समाप्त हो गया है। संघीय कार्यों के लिए अस्थायी धन मुहैया कराने से संबंधित विधेयक पर बुधवार रात राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के हस्ताक्षर करने के बाद देश के इतिहास में सर्वाधिक लंबा यह शटडाउन समाप्त हुआ। रिपब्लिकन और डेमोक्रेट्स के बीच चल रहे गतिरोध को समाप्त करने के लिए सीनेट ने संबंधित विधेयक को मंजूरी दी। यह डेमोक्रेट्स के लिए एक झटका है क्योंकि पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के कार्यकाल के स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम - ओबामाकेयर के लिए सब्सिडी बढ़ाने की मांग को स्वीकार नहीं किया गया। बजट पारित होने तक अस्थायी वित्त-पोषण का विधेयक सीनेट में अटका हुआ था क्योंकि बहुमत वाली रिपब्लिकन पार्टी के पास मतदान के लिए आवश्यक 60 वोट नहीं थे। इस बीच, व्हाइट हाउस के बजट कार्यालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि संघीय सरकार के फिर से खुलने के कुछ ही घंटों के भीतर पूरक पोषण सहायता कार्यक्रम (स्नैप) के तहत लाभार्थियों के खाते पूरी तरह से बहाल हो जाएंगे।

शटडाउन समाप्त तो हो गया, लेकिन वित्तीय सहायता रोके जाने से प्रभावित कार्यक्रमों और इसके परिणामों से लोगों को उबरने में कुछ समय लगेगा। कुछ संघीय सेवाएं धीरे-धीरे बहाल होंगी। हजारों सरकारी कर्मचारी इस बात को लेकर असमंजस में हैं कि उन्हें उनका बकाया वेतन कब मिलेगा। एयरलाइन और आतिथ्य क्षेत्र जैसे उद्योगों को सरकारी खर्च में कमी का असर महसूस हुआ था। उन्हें अपनी स्थिति फिर से पटरी पर लाने के लिए और भी अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है। बाकी अर्थव्यवस्था भी कुछ समय तक इसका असर महसूस कर सकती है। संघीय कानून के अनुसार, जिन कर्मचारियों का वेतन शटडाउन के दौरान रुका हुआ था, उन्हें पूरा वेतन मिलना जरूरी है। अतीत में, अवैतनिक कर्मचारियों को पिछला वेतन मिलने में लगभग एक हफ्ते का समय लगता था, हालांकि कार्मिक प्रबंधन कार्यालय ने कहा है कि यह एजेंसी के अनुसार अलग-अलग होता है। परिवहन मंत्री सीन डफी ने कहा है कि हवाई यातायात नियंत्रकों को शटडाउन समाप्त होने के 24 से 48 घंटों के भीतर उनके बकाया वेतन का 70 प्रतिशत मिल जाएगा, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि सरकार के अन्य विभागों के लिए भी यही समय-सारिणी लागू होगी या नहीं। एयरलाइन उद्योग के प्रतिनिधियों का अनुमान है कि शटडाउन के बाद हवाई यात्रा सामान्य होने में लगभग एक सप्ताह का समय लगेगा। लेकिन, इस समय-सारिणी को बनाए रखने के लिए कुछ चीजें होनी जरूरी हैं। परिवहन विभाग को यह सुनिश्चित करना होगा कि हवाई यातायात नियंत्रक पर्याप्त संख्या में काम पर लौट रहे हैं ताकि कर्मचारियों की कमी के कारण होने वाली देरी का खतरा कम से कम हो। पिछले शुक्रवार से शुरू हुए 40 हवाई अड्डों पर अनिवार्य उड़ान प्रतिबंधों को हटाना होगा।

हम ऐसा दोबारा कभी नहीं होने देंगे : ट्रंप

रिपब्लिकन राष्ट्रपति ट्रंप ने इस स्थिति के लिए डेमोक्रेट्स को जिम्मेदार ठहराया और सुझाव दिया कि मतदाताओं को अगले साल होने वाले मध्यावधि चुनावों में इस पार्टी को 'पुरस्कृत' नहीं करना चाहिए। ट्रंप ने कहा, "पिछले 43 दिनों से कांग्रेस में डेमोक्रेट्स ने अवैध विदेशियों के लिए अमेरिकी करदाताओं से सैकड़ों अरब डालर की जबरन वसूली करने के प्रयास में अमेरिका की सरकार को ठप कर दिया। आज, हम एक स्पष्ट संदेश दे रहे हैं कि हम जबरन वसूली के आगे कभी नहीं झुकेंगे। मैं अमेरिकी लोगों से बस इतना कहना चाहता हूं कि आपको यह नहीं भूलना चाहिए। जब हम मध्यावधि चुनावों और अन्य मुद्दों पर आते हैं तो यह मत भूलिए कि उन्होंने (डेमोक्रेट्स) हमारे देश के साथ क्या किया है। हम ऐसा दोबारा कभी नहीं होने देंगे। देश चलाने का यह कोई तरीका नहीं है।"

ट्रंप के मंत्री बोले, अमेरिका आएं हमें सिखाएं, फिर घर लौट जाएं

वाशिंगटन, प्रेट्र: एक दिन पूर्व ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एच1बी वीजा पर नरमी के संकेत देने के अगले ही दिन वित्त मंत्री स्काट बेसेंट ने राष्ट्रपति के बयान की हास्यास्पद व्याख्या की। बेसेंट ने गुरुवार को कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप दरअसल ये कहना चाहते थे कि विदेशी कुशल कामगार यहां आकर अमेरिकियों को प्रशिक्षित करें और उसके बाद अपने-अपने देश लौट जाएं।

एक न्यूज चैनल से बातचीत में बेसेंट ने कहा कि राष्ट्रपति का विजन ये है कि लोग यहां आएं, तीन, पांच या सात साल तक यहां रहें, अमेरिकियों को प्रशिक्षित करें। क्योंकि हमारे पास लंबे समय से दक्षता नहीं है। हमने 20-30 साल पहले ही जहाज निर्माण या सेमीकंडक्टर तैयार करने की नौकरियां दूसरे देशों में भेज दी थीं। उन्होंने कहा कि अब हम

अमेरिकी वित्त मंत्री बेसेंट ने की एच1बी वीजा पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड के बयान की हास्यास्पद व्याख्या

अचानक किसी से नहीं कह सकते कि आपको पानी का जहाज बनाना सीखना होगा। हम सेमीकंडक्टर उद्योग को वापस अमेरिका लाना चाहते हैं। हमने वर्षों से जहाज नहीं बनाए हैं, न सेमीकंडक्टर तैयार किए हैं। बेसेंट ने कहा कि प्रशासन अमेरिकियों को रोजगार में प्राथमिकता के प्रति दृढ़ है, लेकिन ये भी महसूस किया जा रहा है कि रक्षा, जहाज निर्माण और सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञ विदेशी प्रतिभा की तत्काल जरूरत है। इस क्षेत्र में स्वदेशी पकड़ बनाने में समय लगेगा। इसके तहत तीन, पांच या सात साल तक के लिए विदेशी विशेषज्ञों को यहां आकर अमेरिकी कामगारों को प्रशिक्षित करना होगा।

Dainik Jagaran Page No-15

रेल मार्ग के माध्यम से व्यापार बढ़ाने को भारत और नेपाल ने किया करार

- **पीयूष गोयल एवं अनिल कुमार सिन्हा के बीच विनिमय पत्र का आदान-प्रदान हुआ**
- **इससे दोनों देशों के आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध और मजबूत होने की उम्मीद है**

नई दिल्ली में गुरुवार को द्विपक्षीय बैठक के दौरान अपने नेपाली समकक्ष अनिल कुमार सिन्हा से हाथ मिलाते केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल • एएनआइ

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत और नेपाल ने गुरुवार को जोगबनी-बिराटनगर रेल लिंक के साथ कंटेनरयुक्त और थोक माल के लिए एक सीधा रेल संपर्क स्थापित करने हेतु एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इससे कोलकाता और विशाखापत्तनम बंदरगाहों से बिराटनगर के पास मोरंग जिले में स्थित नेपाल सीमा शुल्क यार्ड कार्गो स्टेशन तक परिवहन सुगम हो जाएगा। दोनों देशों ने इस संबंध में भारत और नेपाल के बीच पारगमन संधि के प्रोटोकाल में संशोधन करते हुए विनिमय पत्र (एलओई) का आदान-प्रदान किया।

वाणिज्य मंत्रालय ने कहा, "इस समझौते से जोगबनी (भारत) और बिराटनगर (नेपाल) के बीच रेल-आधारित माल ढुलाई सुगम होगी, जिसमें थोक माल भी शामिल है।" मंत्रालय ने कहा कि यह उदारीकरण प्रमुख पारगमन गलियारों - कोलकाता-जोगबनी, कोलकाता-नौतनवा (सुनौली) और विशाखापत्तनम-नौतनवा (सुनौली) तक विस्तारित है। इससे दोनों देशों के बीच बहु-माडल व्यापार संपर्क और तीसरे देशों के साथ नेपाल के व्यापार को मजबूती मिलेगी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और नेपाल के उद्योग, वाणिज्य एवं आपूर्ति मंत्री अनिल कुमार सिन्हा के बीच द्विपक्षीय बैठक के दौरान यहां एलओई का आदान-प्रदान हुआ। वाणिज्य मंत्रालय ने आगे कहा कि भारत, नेपाल का सबसे बड़ा व्यापार और निवेश साझेदार बना हुआ है, और उसके विदेशी व्यापार में भारत की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है।

Dainik Jagaran Page No-13

Useful For Mains

कुपोषण की परतें

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि एक ओर कई प्रमुख फसलों की पैदावार में उम्मीद से ज्यादा की बढ़ोतरी के दावे किए जा रहे हैं, देश भर में बड़ी संख्या में लोगों को मुफ्त अनाज मुहैया कराया जा रहा है, वहीं महाराष्ट्र के एक हिस्से से कुपोषण की वजह से गरीब बच्चों की मौत की खबर आती है। राज्य के आदिवासी क्षेत्र मेलघाट में इस वर्ष जून से लेकर अब तक, यानी पिछले छह महीने में पैंसठ शिशुओं की मौत हो गई, लेकिन राज्य सरकार के संबंधित विभागों ने उन परिवारों की सुध तक नहीं ली। अब बंबई उच्च न्यायालय ने बुधवार को कई याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए राज्य सरकार को इस मसले पर कड़ी फटकार लगाई है। गौरतलब है कि मेलघाट आदिवासी बहुल इलाका है और यह कई वर्षों से कुपोषण की समस्या से ग्रस्त है। इस मामले में राज्य सरकार की दलीलें और प्रस्तुत किए गए कागजात इतने कमजोर हैं कि कोई इन पर भरोसा नहीं कर सकता। स्वाभाविक ही अदालत भी इससे असंतुष्ट रही और उसे कहना पड़ा कि कागज पर तो सब ठीक दिखता है, लेकिन वास्तविकता कोसों दूर है।

ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि जब राज्य सरकार कल्याणकारी योजनाएं चला रही है, संभवतः केंद्र सरकार की मुफ्त अनाज की योजना भी वहां चल रही होगी, तो ऐसे में संबंधित आदिवासी बहुल क्षेत्र में कुपोषण कैसे अपने पांव फैला रहा था। अगर इस क्षेत्र में शिशुओं की मौत हो रही थी, तो इसके कारणों को जानने और उन्हें समय पर दूर करने की कवायद क्यों नहीं हुई। इसमें कोई दोराय नहीं कि आदिवासी इलाकों में कुपोषण के साथ चिकित्सा का अभाव एक गंभीर समस्या है। खासतौर पर मेलाघाट क्षेत्र में गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताएं आहार और उपचार के घोर अभाव का सामना कर रही हैं। अगर शिशुओं की माताओं को पोषक आहार के साथ चिकित्सा सहायता देने की पहल की गई होती, तो ज्यादातर शिशुओं को बचाया जा सकता था। मगर यह समझना मुश्किल है कि महानगरों की जरूरतों के लिए संसाधनों में कोई कमी न होना सुनिश्चित करने वाली सरकार गरीब तबकों या आदिवासी परिवारों के बच्चों को पोषणयुक्त भोजन मुहैया करा पाने में कोई रुचि क्यों नहीं लेती।

Jansatta Page No-08

राहत और चुनौती

दुनिया भर में तपेदिक या टीबी के उन्मूलन का लक्ष्य हासिल करना दशकों से एक जटिल चुनौती है। समय-समय पर इस बीमारी से संबंधित नए तथ्य और इलाज को लेकर जिस तरह के आंकड़े और ब्योरे सामने आते रहे हैं, वे इस रोग से उपजी व्यापक समस्या से पार पाने की दिशा में एक निरंतरता का बयान तो करते हैं, लेकिन तपेदिक को पूरी तरह खत्म कर पाना अब तक संभव नहीं हो पाया है। भारत में इस रोग से प्रभावित वर्गों की जीवन-स्थितियां और उनके जितने स्तर रहे हैं, उसमें अनुकूल नतीजे तक पहुंचना थोड़ा और जटिल हो जाता है। मगर अब इस दिशा में एक राहत देने वाली खबर आई है कि भारत में टीबी के मामलों में तेजी से गिरावट आ रही है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की वैश्विक तपेदिक (टीबी) रपट, 2025 के मुताबिक भारत में हर वर्ष टीबी के नए मामलों में इक्कीस फीसद तक की कमी आई है। 2015 में प्रत्येक एक लाख की आबादी पर यह संख्या जहां दो सौ सैंतीस थी, वहीं वर्ष 2024 में घट कर प्रति लाख जनसंख्या पर एक सौ सत्तासी हो गई।

जाहिर है, टीबी के नए मामलों में इतनी कमी इस रोग को देश से पूरी तरह खत्म करने के लिए काफी नहीं है, लेकिन बीते कुछ वर्षों के दौरान इस गिरावट को काफी अहम माना जा सकता है। इसी क्रम में सरकार ने भी इस वर्ष के अंत तक टीबी को देश से पूरी तरह खत्म करने का लक्ष्य रखा है। मगर अब भी इस रोग के प्रभाव क्षेत्र और जड़ों की जो वास्तविक तस्वीर है, उसमें इसके पूरी तरह उन्मूलन के लिए और ज्यादा ठोस कदम उठाने की जरूरत लगती है। दरअसल, नए मामलों में तेजी से गिरावट निश्चित रूप से एक उम्मीद पैदा करती है, लेकिन अब भी टीबी की वजह से होने वाली मौतों को कम करने का लक्ष्य काफी दूर है। पिछले वर्ष सरकार ने संसद में बताया था कि सन 2023 में देश में टीबी से पचासी हजार लोगों की मौत हो गई थी। हालांकि सरकार का कहना है कि नई तकनीकों के ज्यादा से ज्यादा उपयोग, सेवाओं को निचले स्तर तक पहुंचाना और बड़े पैमाने पर इस रोग के प्रति लोगों को जागरूक करने की वजह से टीबी के उपचार के दायरे में काफी विस्तार होगा और इससे इस रोग को खत्म करने में मदद मिलेगी।

सवाल है कि इस आशावाद के समांतर सरकार क्या जमीनी स्तर पर तपेदिक की मार से प्रभावित वर्गों तक दवाओं और उपचार की पहुंच सुनिश्चित कर पा रही है, ताकि टीबी उन्मूलन का उद्देश्य समय पर हासिल किया जा सके। यह छिपा नहीं है कि टीबी उन्मूलन के मकसद के साथ जद्दोजहद करते देश में जमीनी स्तर पर चिकित्सकों, स्वास्थ्यकर्मियों और कार्यकर्ताओं की काफी कमी है। तपेदिक के कई मरीज इस आर्थिक हालत में होते हैं कि सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में अभाव की स्थिति में अगर उन्हें दवा बाहर से लेनी पड़े तो वे खुद को लाचार पाते हैं। ऐसे तमाम लोग हैं, जिनकी रिहाइश रोशनी, साफ पानी और हवा की उपलब्धता से वंचित है तथा वे पोषक तत्त्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ के अभाव से भी दो-चार हैं। ऐसे में तपेदिक जैसा रोग तेजी से अपने पांव फैलाता है। मगर इस बीमारी को खत्म करने के मकसद से किए जा रहे प्रयास के अगर सकारात्मक नतीजे सामने आ रहे हैं, तो यह अच्छा है। जरूरत इस बात की है कि तपेदिक के समूचे देश से उन्मूलन को लेकर एक ठोस कार्ययोजना पर काम हो और अपेक्षित नतीजे हासिल किए जाएं।

Jansatta Page No-08

सक्रियता के समांतर

ममता कुशवाहा

मनुष्य का मस्तिष्क उसकी सबसे अद्भुत और शक्तिशाली संपत्ति है। यह न केवल हमारी सोच, भावनाओं और निर्णयों का केंद्र है, बल्कि हमारे व्यक्तित्व की असली पहचान भी है। वैज्ञानिक मानते हैं कि बीस वर्ष की आयु के बाद दिमाग की सक्रियता धीरे-धीरे घटने लगती है, लेकिन यह प्रक्रिया अपरिहार्य नहीं है। अगर हम अपने मस्तिष्क को निरंतर नई चुनौतियां दें, नई चीजें सीखें और जिज्ञासु बने रहें, तो यह जीवनभर युवा रह सकता है। जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है, वैसे ही दिमाग के लिए 'मानसिक व्यायाम' अनिवार्य होता है। जब तक हम अपने दिमाग को नई चुनौतियां देते रहते हैं, तब तक उसका वृद्ध होना टलता रहता है।

मानसिक गतिविधियां, जैसे पहेलियां हल करना, नई भाषाएं सीखना, शतरंज या सुडोकू जैसे खेल खेलना, पठन-पाठन करना या नई कलाओं का अभ्यास करना- मस्तिष्क की कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। जब हम किसी नए विषय पर सोचते हैं या दिमाग को किसी जटिल कार्य में लगाते हैं, तो मस्तिष्क की कोशिकाओं के बीच नई तंत्रिका जोड़ियां (न्यूरल कनेक्शन) बनती हैं। ये न केवल याददाश्त को मजबूत करती हैं, बल्कि सोचने-समझने और निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रखर बनाती हैं। जो लोग जीवनभर सीखते रहते हैं, उनका मस्तिष्क अधिक समय तक तेज और युवा बना रहता है।

'इकिगाई' नामक प्रसिद्ध जापानी पुस्तक में इसी सिद्धांत को बड़े सुंदर ढंग से समझाया गया है। 'इकिगाई' का अर्थ है, जीने का उद्देश्य या जीवन का अर्थ। जापान के ओकिनावा क्षेत्र के लोग विश्व में सबसे दीर्घायु माने जाते हैं। उनके दीर्घ और सुखी जीवन का रहस्य केवल संतुलित आहार या वातावरण नहीं है, बल्कि उनका मानसिक दृष्टिकोण भी है। वे जीवनभर कुछ नया सीखते हैं, अपने कार्य में आनंद खोजते हैं, दूसरों से जुड़ते हैं और हर दिन को एक नई चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं। यही निरंतर जिज्ञासा और सक्रियता उनके दिमाग को युवा रखती है।

हमारा मस्तिष्क एक अद्भुत अंग है, यह जितना प्रयोग किया जाता है, उतना ही प्रखर होता जाता है। इसके विपरीत, अगर इसे निष्क्रिय छोड़ दिया जाए तो यह धीरे-धीरे अपनी सक्रियता खोने लगता है। मानसिक जड़ता या एकरस जीवन मस्तिष्क की वृद्धावस्था का सबसे बड़ा कारण है। आज के युग में मानसिक व्यायाम के अनेक साधन उपलब्ध हैं। इंटरनेट पर दिमागी खेल, आनलाइन प्रश्नोत्तरी, भाषा-शिक्षण ऐप या स्मृति प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसी कई सुविधाएं मौजूद हैं, लेकिन ये केवल खेल या तकनीक तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह सोचने का तरीका है। अगर हम हर दिन को कुछ नया जानने, कुछ अलग करने की चुनौती के रूप में लें, तो हमारा मस्तिष्क स्वाभाविक रूप से सक्रिय रहेगा। कोई व्यक्ति रोज एक नया शब्द सीखने, किसी अनजाने विषय पर पढ़ने या किसी रचनात्मक कला जैसे चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि में समय देने की आदत डाल ले, तो उसका दिमाग न केवल युवा रहेगा, बल्कि जीवन के प्रति उत्साह भी बना रहेगा।

दिमाग को युवा बनाए रखने का एक रास्ता है- सकारात्मक सोच और सामाजिक जुड़ाव। जब हम दूसरों से संवाद करते हैं, नए अनुभव साझा करते हैं या समाज से जुड़े रहते हैं, तो हमारा मस्तिष्क नई सूचनाएं ग्रहण करता है। सामाजिक संपर्क मस्तिष्क में डोपामिन और आक्सीटोसिन जैसे 'खुशी के हार्मोन' बढ़ाते हैं, जो तनाव को कम कर मानसिक स्वास्थ्य को स्थिर रखते हैं। इसके विपरीत, अकेलापन और मानसिक तनाव दिमाग की कार्यक्षमता को क्षीण करते हैं। इसलिए दूसरों के साथ बातचीत करना, समूह में काम करना और मित्रों या परिवार के साथ-समय बिताना भी मस्तिष्क की सक्रियता के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना शारीरिक व्यायाम।

वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि दिमाग की कार्यक्षमता केवल मानसिक गतिविधियों से नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य से भी जुड़ी होती है। एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क बसता है। नियमित व्यायाम से रक्त संचार बेहतर होता है, जिससे मस्तिष्क तक पर्याप्त आक्सीजन और पोषण पहुंचता है। योग, ध्यान और प्राणायाम जैसी भारतीय परंपराएं न केवल मन को शांत करती हैं, बल्कि मस्तिष्क की एकाग्रता और स्मरण शक्ति को भी सुदृढ़ बनाती हैं। यह भी पाया गया है कि जो लोग ध्यान या 'मेडिटेशन' करते हैं, उनके दिमाग में 'ग्रे मैटर' अधिक समय तक सुरक्षित रहता है, जिससे उनकी उम्र बढ़ने पर भी स्मरण शक्ति और निर्णय क्षमता अच्छी बनी रहती है। इसके अतिरिक्त, भोजन का भी हमारे दिमाग पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विटामिन-बी, ओमेगा-3 फैटी एसिड, फल, सब्जियां और पर्याप्त जल सेवन मस्तिष्क को पोषण देते हैं। वहीं अत्यधिक जंक फूड, धूम्रपान और मद्यपान मस्तिष्क की कोशिकाओं को क्षति पहुंचाते हैं। जापानी संस्कृति में हल्का, संतुलित और प्राकृतिक आहार लेने की परंपरा है, जो उनके दिमागी स्वास्थ्य का एक महत्त्वपूर्ण कारण है।

दुनिया मेरे आगे

मनुष्य की उम्र केवल वर्षों से नहीं, बल्कि उसकी मानसिक सक्रियता से तय होती है। एक सत्तर वर्षीय व्यक्ति, जो अब भी नई बातें सीखने की चाह रखता है, वह मानसिक रूप से कहीं अधिक युवा है, बनिस्बत उस तीस वर्षीय व्यक्ति के, जो जीवन को एकरसता से जीता है।

मनुष्य की उम्र केवल वर्षों से नहीं, बल्कि उसकी मानसिक सक्रियता से तय होती है। एक सत्तर वर्षीय व्यक्ति, जो अब भी नई बातें सीखने की चाह रखता है, वह मानसिक रूप से कहीं अधिक युवा है, बनिस्बत उस तीस वर्षीय व्यक्ति के, जो जीवन को एकरसता से जीता है। उम्र केवल शरीर की गणना है, जबकि मस्तिष्क की उम्र हमारे विचारों और जिज्ञासा से निर्धारित होती है। यह आवश्यक है कि हम अपने दिमाग को कभी 'आराम' के नाम पर निष्क्रिय न करें। उसे नए अनुभवों, नई चुनौतियों और नई जानकारियों से भरते रहें। चाहे शतरंज खेलना हो, कविता लिखना, नई भाषा सीखना या किसी नए विषय पर शोध करना, हर छोटी-बड़ी गतिविधि मस्तिष्क को युवा बनाए रखने का साधन है।

हादसों की रफ्तार और जोखिम का सफर

हाल के महीनों में सड़क हादसों की रफ्तार में तेज बढ़ोतरी देखी गई है। उनमें नाहक ही लोगों की जान चली गई, कई स्थायी तौर पर अपंग हो गए। अगर इस गंभीर होती समस्या के हल के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह देश के लिए एक मुश्किल चुनौती बन कर खड़ी हो जाएगी।

विकेश कुमार बडोला

भारत में सार्वजनिक परिवहन और निजी वाहनों से होने वाली दुर्घटनाएं हर साल बढ़ रही है। हाल के महीनों में सड़कों पर हादसों की रफ्तार में तेज बढ़ोतरी देखी गई है। उनमें नाहक ही लोगों की जान चली गई, कई स्थायी तौर पर अपंग हो गए। अगर इस गंभीर होती समस्या के हल के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो अकेले यह समस्या देश के लिए एक बड़ी चुनौती बन कर खड़ी हो जाएगी। यों सड़क दुर्घटनाओं को लेकर अक्सर सवाल उठते रहे हैं। यहां तक कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री भी इस स्थिति को लेकर निराशा जता चुके हैं। खुद मंत्रालय की वेबसाइट पर वर्ष 2023 की दुर्घटनाओं के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि वर्ष 2023 में भारतीय सड़कों पर 4,80,583 दुर्घटनाएं हुई हैं। इनमें 1,72,890 लोगों की मृत्यु हुई तथा 4,62,825 लोग घायल हुए हैं। आंकड़ों के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं और मृतकों तथा घायलों की संख्या में 2022 की तुलना में वृद्धि हुई है। ये सभी आंकड़े डराते हैं।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की वेबसाइट पर ये आंकड़े फिलहाल वर्ष 2023 तक के हैं। हालांकि इसके बाद 2024 और 2025 में सड़क हादसे अप्रत्याशित रूप से बढ़े हैं। विशेषकर 2025 अगस्त से लेकर अभी तक हुई कई सड़क दुर्घटनाओं ने सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था पर सवालिया निशान लगा दिया है। सबसे अधिक सड़क हादसे राजस्थान में हुए हैं। इस प्रदेश के अलावा मध्य प्रदेश, कर्नाटक, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में भी बड़ी सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं। राजस्थान और मध्य प्रदेश से लगती इसकी सीमा पर पांच नवंबर को ही दो-तीन सड़क दुर्घटनाओं में कई लोगों की मृत्यु हो गई। जबकि तीन नवंबर को जयपुर में नशे में धुत डंपर चालक ने सत्रह वाहनों को टक्कर मारी, जिसमें तेरह लोगों की मौत हो गई। फलौदी में एक नवंबर को सड़क दुर्घटना में दो बच्चों सहित छह लोगों की मौत हो गई थी।

पिछले महीने भी शासन, समाज, परिवहन विभाग और चालकों की लापरवाही के कारण छोटी-बड़ी अनेक सड़क दुर्घटनाएं हुईं। इंदौर शहर के हवाईअड्डा मार्ग पर 15 सितंबर 2025 को एक ट्रक चालक ने कई लोगों को कुचल डाला था। इससे पहले 12 सितंबर को कर्नाटक राज्य के हासन जनपद में गणेश मूर्ति के विसर्जन के लिए जा रहे युवकों के समूह पर एक चालक ने ट्रक चढ़ा दिया था। इस दुर्घटना में आठ युवकों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई थी। जबकि 20 से अधिक लोग बुरी तरह घायल हो गए थे। अगर प्रति माह सड़क और रेल दुर्घटनाओं के आंकड़े प्रदर्शित किए जाएं, तो सूची बहुत लंबी हो जाएगी। यह स्थिति भारत के सार्वजनिक परिवहन के लिए अत्यंत चिंताजनक है। दुर्घटना की खबरें विचलित करती हैं। सामान्य लोगों में स्वाभाविक रूप से चिंता पैदा करती है। उनमें हर समय एक प्रकार का तनाव बना रहता है। मानसिक अवसाद भी होने लगता है।

दुर्घटनाएं केवल सड़कों या राजमार्गों पर ही नहीं हो रहीं। रेलमार्ग भी असुरक्षित हो चुका है। रेलवे प्रशासन अपनी ओर से भरसक कोशिश करता है कि रेल हादसों पर अंकुश लगे। मगर अराजक तत्त्वों द्वारा रेल मार्गों पर पटरियों के साथ जानबूझ कर की जा रही छेड़छाड़

के कारण ही अधिक रेल दुर्घटनाएं हुई हैं। हालांकि कभी-कभी संकेतक प्रणाली में गड़बड़ियों के कारण भी हादसे हुए हैं। सार्वजनिक आवागमन का मार्ग हो या रेल तथा वायु परिवहन, कोई भी दुर्घटनाओं से रहित नहीं है। मगर सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं की आवृत्ति

> सड़क दुर्घटनाएं कई कारणों से हो रही हैं। इनमें प्रमुख है वाहनों की बेकाबू रफ्तार। सार्वजनिक क्षेत्र और लोगों के जीवन के प्रति वाहन चालकों का गैरजिम्मेदाराना व्यवहार भी दुर्घटनाओं का कारण है। इस पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाता। शराब का सेवन कर तेज रफ्तार में वाहन चलाने से सर्वाधिक दुर्घटनाएं हुई हैं। वस्तुओं को लाने-ले जाने वाले ट्रक-टेम्पो चालकों पर बिना आराम किए दिन-रात लंबी दूरी तय करने का दबाव होता है। ऐसे में उनकी नींद पूरी नहीं होती। इसी बीच वे शराब का सेवन करते हैं। महीनों और वर्षों की उनकी ये आदत अंततः उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

ने सरकार और नागरिकों को गहरी चिंता में डाल दिया है।

दरअसल, सड़क दुर्घटनाएं कई कारणों से हो रही हैं। इनमें प्रमुख है वाहनों की बेकाबू रफ्तार। इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र और लोगों के जीवन के प्रति वाहन चालकों का गैरजिम्मेदाराना व्यवहार भी वजह है। इस पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाता। शराब पीकर तेज रफ्तार में वाहन चलाने से सर्वाधिक दुर्घटनाएं हुई हैं। वस्तुओं को लाने-ले जाने वाले ट्रक-टेम्पो चालकों पर बिना आराम किए दिन-रात लंबी दूरी तय करने का दबाव होता है। ऐसे में उनकी नींद पूरी नहीं होती और इसी बीच वे शराब का भी सेवन करते हैं। महीनों और वर्षों की उनकी ये आदत अंततः उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। नियमित रूप में भारी वाहन चलाने वाले चालकों का स्वास्थ्य अगर ठीक नहीं होगा, तो उनका वाहन चलाना दूसरों के लिए खतरनाक ही साबित होगा। गौरतलब है कि अनियंत्रित तरीके से गाड़ियां चलाए जाने से कई बार बड़ी दुर्घटनाएं हो चुकी हैं।

ये चुनौतियां गंभीर हैं। लिहाजा सार्वजनिक परिवहन के साथ ही सड़कों और राजमार्गों पर दुर्घटनाएं रोकने के लिए सरकार को नई नीतियां बनानी होंगी। प्रमुख कारणों की पड़ताल करते हुए इनसे जुड़ी सभी समस्याओं का निराकरण करना होगा। जैसे कि ट्रक चालकों पर बेवजह का अतिरिक्त दबाव कम करना होगा। चालकों और परिवहन कंपनियों के बीच सभी समस्याओं के निराकरण के लिए समन्वय स्थापित करना होगा। परिवहन कंपनियों द्वारा नियुक्त अथवा स्वतंत्र रूप में वाहन चलाने वाले, दोनों प्रकार के चालकों के लिए कामकाजी घंटे निर्धारित करने होंगे। शासन की ओर से यह प्रयास हो कि भारी वाहन चला रहे बस, ट्रक या अन्य वाहनों के चालकों के लिए शासकीय अथवा परिवहन कंपनियों द्वारा नियमित रूप में स्वास्थ्य कार्यशालाएं लगाई जाएं। इनमें चालकों के लिए समाज और सार्वजनिक जीवन में दायित्व निर्वहन से संबद्ध रचनात्मक गतिविधियों की व्यवस्था हो। संभव हो तो ऐसी गतिविधियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले चालकों को प्रोत्साहित किया जाए। वाहन चलाने के दौरान चालक शराब का सेवन किसी भी स्थिति में न करें, इसके लिए भी उपाय किए जाएं। उन्हें समझाया जाए कि उनका चालन-कार्य बेहद महत्त्वपूर्ण है। उन्हें वाहन चलाते समय अपनी जिम्मेदारी का अहसास रहे। उनको बताया जाए कि सार्वजनिक वस्तुओं को लाने-ले जाने में उनकी बड़ी भूमिका है। इसी कारण लोगों तक उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुएं पहुंच पाती हैं।

प्रायः सड़कों पर यह भी देखा जाता है कि कई बार सार्वजनिक वस्तुओं को लाने-ले जाने वाले ट्रक और टेम्पो चालकों-परिचालकों को कमतर भाव से देखा जाता है। कुछ लोग उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं और उन्हें यह एहसास कराने में कोई कमी नहीं छोड़ते कि वे अनपढ़ हैं और उनका कार्य निम्न स्तर का है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर समझा जाए, तो यह कटु सत्य है कि अपने साथ वर्षों से होते आए ऐसे सार्वजनिक बर्ताव के कारण भारी और वाणिज्यिक वाहन चला रहे चालक-समुदाय ने छोटे वाहनों और कार चालकों के प्रति एक शत्रुतापूर्ण व्यवहार बना लिया है। कई बार अत्यधिक शराब पीने के कारण उनका ऐसा व्यवहार अनियंत्रित रूप से वाहन चलाने के रूप में सामने आता है। हालांकि सभी दुर्घटनाएं इसी कारण नहीं होती हैं, लेकिन अगर चालकों को विश्वास दिलाया जाए कि लोगों की दृष्टि में उनका कार्य बहुत महत्त्व का है, तो निश्चित रूप में उनके व्यवहार में बदलाव आएगा। वे अपने सार्वजनिक उत्तरदायित्व को समझेंगे। इससे सड़क दुर्घटनाओं में उत्तरोत्तर कमी आने की स्थायी भूमिका बन सकती है। मगर लापरवाही के प्रति नरमी किसी भी हालत में नहीं बरती जानी चाहिए।

Jansatta Page No-8

Dainik Jagaran Page No-10

Jansatta Page No-6

भविष्य को आकार दे रही तकनीक

हाल में आए एक आंकड़े से पता चला कि चीन अमेरिका की तुलना में 2.5 गुना ज्यादा बिजली उत्पन्न करता है और उसका लक्ष्य हर साल ''एक जर्मनी'' के बराबर बिजली उत्पादन जोड़ने का है। एलन मस्क का भी कहना है कि अगले तीन-चार वर्षों में चीन में सौर ऊर्जा का उत्पादन अमेरिका के सभी स्रोतों से संयुक्त रूप से अधिक होगा। वास्तव में भविष्य को आकार देने वाली तकनीक के युग में चार तकनीकें तय करेंगी कि कौन आगे रहेगा- ऊर्जा, गतिशीलता (मोबिलिटी), एआइ और युद्ध की रणनीति (वारफेयर)। वर्ष 2010 से अब तक चीन का बिजली उत्पादन दोगुने से भी ज्यादा बढ़कर 10,000 टेरावाट घंटा हो गया है, जबकि अमेरिका पिछले एक दशक से 4,000 टेरावाट घंटा पर ठहरा हुआ है। असल बात यह है कि चीन सिर्फ बिजली की दौड़ नहीं जीत रहा, बल्कि वह यह स्वच्छ ऊर्जा के साथ कर रहा है। सिर्फ 2025 की पहली छमाही में चीन ने 212 गीगावाट सौर ऊर्जा जोड़ी, जो अमेरिका की कुल स्थापित क्षमता से भी अधिक है। 2024 में चीन ने 14.4 गीगावाट हाइड्रोपावर जोड़ी, जो कई देशों के कुल उत्पादन से अधिक है और 58.7 गीगावाट पंप्ड-स्टोरेज हाइड्रो तक पहुंच गया है एवं 200 गीगावाट से अधिक क्षमता निर्माणाधीन है। वह परमाणु ऊर्जा में भी सक्रिय है, जहां 30 रिएक्टर निर्माणाधीन हैं। कम वाणिज्यिक बिजली दरों और विशाल विनिर्माण की बदौलत बैटरी क्षेत्र में चीन ने फिर से ग्लोबल सप्लाई-चेन रैंकिंग में पहला स्थान हासिल किया है। सौर विनिर्माण की हर अवस्था में चीन की हिस्सेदारी 80 प्रतिशत से अधिक है। ऊर्जा वह कच्चा माल है, जो बाकी सभी मूलभूत तकनीक को चलाएगा। चीन इसमें में काफी आगे निकल चुका है और उन कीमतों पर, जिनसे कोई मुकाबला नहीं कर सकता।

गतिशीलता में भी चीन आगे है। उसने इलेक्ट्रिक वाहनों पर वर्चस्व स्थापित कर लिया है। 2024 में चीन ने वैश्विक इलेक्ट्रिक कार बिक्री का लगभग दो-तिहाई हिस्सा अपने नाम किया। घरेलू बाजार में हर महीने बेची जाने वाली आधी कारें इलेक्ट्रिक हैं और दुनिया के शीर्ष 10 इलेक्ट्रिक वाहन के ब्रांडों में से छह अब चीनी हैं। चीन के वाहन अब उभरते बाजारों पर कब्जा कर रहे हैं। चीन में 100 से अधिक कंपनियां इलेक्ट्रिक वाहन बनाती हैं। एआइ के नए माडल बनाने में अब भी अमेरिका आगे है, लेकिन जब एआइ का फोकस ''नवाचार'' से ''विस्तार'' पर शिफ्ट हो रहा है, तो असली जीत सिर्फ माडल से नहीं, बल्कि कंप्यूटर के लिए ऊर्जा, डाटा की उपलब्धता, नियामक गति और एप्लिकेशन अपनाने की दर से तय होगी। अमेरिका के लिए आज की सबसे बड़ी बाधा है ऊर्जा। जहां अमेरिका ऊर्जा स्वतंत्रता हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहा है, चीन ने उस समस्या को पहले ही हल कर लिया है। स्वतंत्र आकलनों के अनुसार, 2030 तक चीन के डाटा सेंटर 400-600 टेरावाट घंटा बिजली खपत करेंगे, जो तेजी से स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों से आएगी। अमेरिका का लक्ष्य 425 टेरावाट घंटा डाटा सेंटर क्षमता स्थापित करने का है, लेकिन उसे यह नहीं पता कि ऊर्जा कहां से आएगी।

चीन एआइ के अगले बड़े चरण रोबोटिक्स में भी व्यापक बढ़त बनाए हुए है। 2023 तक चीन के पास दुनिया के कुल औद्योगिक रोबोट्स का 51 प्रतिशत हिस्सा था और वह हर साल लगभग 2.8 लाख नए रोबोट इंस्टाल कर रहा है। इसका लाभ उसे निर्यात प्रतिस्पर्धा, मजदूरी गतिशीलता और रक्षा औद्योगिक क्षमता में वृद्धि के रूप में मिलेगा। जल्द ही एआइ एक साफ्टवेयर इंटरफेस वाला ऊर्जा व्यवसाय बन जाएगा। सच्चाई यह है कि जहां अमेरिका बेहतर माडल बनाने का जश्न मना रहा है, वहीं चीन ने यह सुलझा लिया है कि उन्हें वास्तव में चलाएगा कौन।

जसप्रीत बिंद्रा

हर क्षेत्र में चीन की प्रगति को देखते हुए भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी रणनीति बदले

तकनीकी विकास में वर्चस्व स्थापित करता चीन ● फाइल

पिछले कुछ वर्षों में युद्ध का स्वरूप बदल गया है। अब युद्ध सस्ते ड्रोन और घूमने वाले गोला-बारूद से लड़े जा रहे हैं, न कि महंगे टैंकों और विमानों से। ड्रोन निर्माण में चीन का वर्चस्व है। उसकी कंपनी डीडेआइ के पास वैश्विक ड्रोन बाजार का 70 प्रतिशत हिस्सा है। इसके मैविक ड्रोन के माडल 300 से 5,000 डालर के बीच आते हैं। ड्रोन विशेषज्ञ बाबी सकाकी के अनुसार, ''डीडेआइ हर साल लाखों ड्रोन बना सकता है, जो अमेरिका की तुलना में सौ गुना अधिक है।'' अमेरिका उन्नत युद्ध ड्रोन बनाता है, लेकिन उनकी कीमत 6 से 13 मिलियन डालर तक होती है। युद्ध के सिद्धांत अब सस्ते ड्रोन, मानव रहित विमान की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें चीन उत्कृष्ट है। अमेरिका के एफ-35 कार्यक्रम की कुल लागत 1.58 ट्रिलियन डालर तक पहुंच गई है, जिससे भविष्य के रक्षा निवेशों के लिए जगह घट गई है।

वैश्विक स्तर पर बन रही इस स्थिति में प्रासंगिक बने रहने के लिए भारत को अपनी विकास रणनीति को तीन बातों पर केंद्रित करना चाहिए- बड़े पैमाने पर ऊर्जा उत्पादन, अपने घरेलू बाजार से परे निर्यात बाजार की खोज और अग्रणी तकनीक तक पहुंच। इन तीनों में चीन का वर्चस्व है। भारत की ''मल्टी-अलाइनमेंट'' रणनीति समझदारी भरी है, लेकिन अब गणित कहता है कि थोड़ा झुकाव जरूरी है। जहां चीन के साथ गठबंधन भारत के हित में हो, वहां वह साझेदारी करे और बाकी मुद्दों को अलग रखे। इसका अर्थ चीन के अधीन होना नहीं है, बल्कि उन विशिष्ट मुद्दों पर सहयोग है, जो भारत की राष्ट्रीय क्षमताओं को मजबूत करें।

(लेखक एआइ एड वियांड के संस्थापक हैं)
response@jagran.com

Dainik Jagaran Page No-10

सेना के संपूर्ण कब्जे में पाकिस्तान

जगतबीर सिंह

अब भारत के लिए पाकिस्तान सरकार से किसी तरह की बातचीत का कोई मतलब नहीं, क्योंकि सारी ताकत सेना ने हथिया ली है

बीते दिनों पाकिस्तानी संसद ने सैन्य कमांड संरचना और न्यायिक ढांचे में व्यापक बदलाव के लिए 27वां संवैधानिक संशोधन विधेयक पारित किया। इसमें अन्य बदलावों के अलावा संविधान के अनुच्छेद 243 को फिर से लिखा गया है। इसमें सशस्त्र बलों के चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज का पद स्थापित किया गया है और ज्वाइंट चीफ्स आफ स्टाफ कमेटी के अध्यक्ष का पद समाप्त कर दिया गया है। यह विधेयक इसलिए पारित हो गया, क्योंकि राष्ट्रीय असेंबली यानी संसद के निचले सदन में सत्तारूढ़ गठबंधन के पास बहुमत था और उच्च सदन यानी सीनेट में विपक्ष ने बहिष्कार कर दिया। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद यह विधेयक कानून बन जाएगा।

पाकिस्तान के इतिहास में अनुच्छेद 243 में पांच बार संशोधन किया गया है। 1973 के मूल संविधान में कहा गया था कि संघीय सरकार के पास सशस्त्र बलों का नियंत्रण और कमान होगी। जनरल जिया-उल-हक ने इसे संशोधित कर कहा कि सशस्त्र बलों की सर्वोच्च कमान राष्ट्रपति को सौंपी जाएगी। ऐसा कर नागरिक सरकार से सैन्य नियंत्रण को स्थानांतरित कर दिया गया। 1997 में प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने इसे पलटते हुए सशस्त्र बलों का नियंत्रण संघीय सरकार और संसद को बहाल किया। जनरल परवेज मुशर्रफ ने 2002 में इसे फिर पलट दिया और राष्ट्रपति का प्रभुत्व बहाल किया। 2010 में 18वें संशोधन के तहत एक बार फिर बदलाव हुआ, जिसमें राष्ट्रपति के पद को सशस्त्र बलों के सर्वोच्च कमांडर के रूप में बनाए रखा गया, लेकिन वास्तविक अधिकार संघीय सरकार को सौंपे गए।

अनुच्छेद 243 में प्रस्तावित परिवर्तन के तहत सेना प्रमुख को चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज के रूप में मान्यता दी जा रही है और ज्वाइंट चीफ्स आफ स्टाफ कमेटी के अध्यक्ष का पद समाप्त किया जा रहा है। यह बदलाव चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज यानी सेना प्रमुख को पाकिस्तान की सशस्त्र सेवाओं का सर्वोच्च अधिकारी बना देगा। इस विधेयक में राष्ट्रीय रणनीतिक कमान के कमांडर का पद स्थापित करने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त उन अधिकारियों को व्यापक लाभ प्रदान करने की व्यवस्था है, जिन्हें फाइव-स्टार रैंक में पदोन्नत किया जाएगा, जैसे फील्ड मार्शल, एयर फोर्स के मार्शल या एडमिरल आफ द फ्लीट।

संविधान संशोधन के तहत राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की सलाह पर सेना, नौसेना और वायु सेना के प्रमुखों की नियुक्ति करेंगे, जबकि सेना प्रमुख चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज के रूप में अपनी

अवधेश राजपूत

भूमिका निभाएंगे। इसके अलावा राष्ट्रीय रणनीतिक कमान का कमांडर भी प्रधानमंत्री द्वारा सेना प्रमुख की सिफारिश पर नियुक्त किया जाएगा और उसे सेना से ही चुना जाएगा। वह पाकिस्तान के परमाणु और रणनीतिक संसाधनों की देखरेख करेगा। जिन अधिकारियों को फाइव-स्टार रैंक में पदोन्नत किया जाएगा, उन्हें आजीवन संवैधानिक सुरक्षा मिलेगी। ये अधिकारी रैंक, विशेषाधिकार और यूनिफार्म जीवनभर बनाए रखेंगे। उन्हें राष्ट्रपति के समान एक महाभियोग प्रक्रिया के माध्यम से ही हटाया जा सकेगा। 27वें संशोधन विधेयक से न्यायिक ढांचे में भी महत्वपूर्ण बदलाव होंगे। संशोधन के केंद्र में एक नया शीर्ष न्यायालय संघीय संवैधानिक न्यायालय (एफसीसी) है। एफसीसी का अपना एक मुख्य न्यायाधीश होगा, जो तीन साल के निश्चित कार्यकाल के लिए पदासीन होगा। उसकी नियुक्ति सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट के वरिष्ठ न्यायाधीशों से की जाएगी।

संविधान संशोधन के बाद मिली शक्तियों के तहत राष्ट्रपति को यह अधिकार होगा कि वे किसी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को एक उच्च न्यायालय से दूसरे में स्थानांतरित कर सकें। यदि कोई न्यायाधीश इस स्थानांतरण को स्वीकार नहीं करेगा तो उसे स्वतः सेवानिवृत्त माना जाएगा। एफसीसी सुप्रीम कोर्ट के कुछ महत्वपूर्ण अधिकारों को भी संभालेगा। उसके फैसले सभी न्यायालयों, यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट पर भी बाध्यकारी होंगे। एफसीसी संघ और प्रांतों के बीच के साथ प्रांतों के बीच विवादों का निपटारा करने का अधिकार भी रखेगा। इसके अतिरिक्त उसे अधिकार होगा कि वह संविधान की व्याख्या से संबंधित कानूनी प्रश्नों से संबंधित मामले स्वतः उठाए।

27वां संशोधन विधेयक पारित होने से 1980 के दशक के संवैधानिक संघर्षों के बाद से पाकिस्तान की रक्षा कमांड संरचना में सबसे बड़ा बदलाव होने जा रहा है। यह नागरिक-सेना रिश्तों के उस नाजुक संतुलन को फिर से परिभाषित करेगा, जो देश के संविधान में हमेशा से मौजूद रहा है। यह संशोधन सेना की संस्थागत स्वायत्तता यानी निरंकुशता को बढ़ाएगा और उसे नागरिक निगरानी से भी मुक्त करेगा। यह विधेयक विशेष रूप से एक व्यक्ति यानी आसिम मुनीर को लाभ पहुंचाने के लिए लाया गया है, न कि रक्षा संरचना को मजबूत करने के लिए।

विवादित संशोधन विधेयक के पारित होने का मतलब है कि पाकिस्तान में लोकतांत्रिक संस्थाएं पंगु बनी रहेंगी। न्यायपालिका, जिसने 26वें संशोधन के बाद अपनी स्वतंत्रता को कमजोर होते देखा है, अब और अधिक कमजोर हो जाएगी। इसी कारण विपक्षी दल इस खतरनाक बदलाव के खिलाफ लोगों से खड़ा होने को कह रहे हैं। यह विधेयक पाकिस्तान की सशस्त्र बलों की भूमिका और शक्ति को बढ़ाएगा, न्यायपालिका को कमजोर करेगा और प्रांतों के वित्तीय अधिकारों को घटाएगा। इसका प्रभाव दूरगामी होगा और यह सरकार द्वारा अपने अधिकारों को चुनौती देने वाली और विशेष रूप से इमरान खान पार्टी से निपटने के लिए उठाया गया कदम प्रतीत होता है। इस विधेयक के पारित होने के बाद भारत के लिए पाकिस्तान की नागरिक सरकार से किसी तरह की बातचीत का कोई मतलब नहीं रह जाएगा, क्योंकि सारे महत्वपूर्ण अधिकार सेना के पास होंगे। प्रायः यह जो कहा जाता है कि जहां देशों के पास अपनी सेनाएं हैं, वहीं पाकिस्तानी सेना के पास अपना एक देश है, वह और अधिक स्थापित हो जाएगा। अभी फील्ड मार्शल आसिम मुनीर पाकिस्तान के अघोषित शासक हैं। अब वे संवैधानिक रूप से भी उसके शासक बन जाएंगे।

(लेखक सेवानिवृत्त मेजर जनरल हैं)
response@jagran.com

Dainik Jagaran Page No-10

राजनीतिक तूफान में अधूरी रह गई कई मुख्यमंत्रियों की यात्रा

बिहार केसरी के अलावा नीतीश कुमार, लालू प्रसाद, राबड़ी देवी व जगन्नाथ मिश्रा ने एक से अधिक बार संभाली कुर्सी

ब्यात एंट • जागरण

पटना : शिखर पर पहुंचकर कायम रह पाना, राजनीति की सबसे बड़ी चुनौती है। बिहार से बेहतर इसे कौन जान सकता है, जहां एक दौर में मुख्यमंत्रियों की कुर्सी ताश के पत्तों की तरह फेंटी गई। अंगुली के पोरों पर गिन लिए जाने वाले दिन हों या विधानसभा के एक ही कार्यकाल में कई-कई बार शपथ लेने की कसरत, मुख्यमंत्रियों से जुड़े ये रिकार्ड बिहार के राजनीतिक इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं।

बिहार में कई मुख्यमंत्रियों ने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया, जबकि कुछ ने लंबी स्थिरता के साथ सत्ता संभाली। इसमें मात्र चार दिन के मुख्यमंत्री सतीश प्रसाद सिंह से लेकर सबसे लंबी पारी का रिकार्ड बनाने वाले नीतीश कुमार तक हैं। 1960-1990 के दौर में राजनीतिक अस्थिरता, गठबंधनों में बिखराव और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण कई मुख्यमंत्रियों का कार्यकाल एक वर्ष

श्रीकृष्ण सिंह (फाइल फोटो)

नीतीश कुमार

जगन्नाथ मिश्रा

लालू प्रसाद

राबड़ी देवी

इन्होंने खेली लंबी पारी

नीतीश कुमार	18 वर्ष से ज्यादा
श्रीकृष्ण सिंह	13 वर्ष, 169 दिन
लालू प्रसाद	सात वर्ष चार महीना 10 दिन
राबड़ी देवी	सात वर्ष 180 दिन
जगन्नाथ मिश्रा	पांच वर्ष छह महीना

इनका कार्यकाल एक वर्ष से भी कम

मुख्यमंत्री	कार्यकाल
सतीश प्रसाद सिंह	4 दिन
दीप नारायण सिंह	17 दिन
बीपी मंडल	50 दिन
हरिहर सिंह	116 दिन
भोला पासवान शास्त्री	99, 12 व 221 दिन
सत्येंद्र नारायण सिन्हा	270 दिन
जीतन राम मांझी	278 दिन
दरोगा प्रसाद राय	309 दिन
राम सुंदर दास	302 दिन
महामाया प्रसाद सिन्हा	329 दिन

पहली बार में नीतीश कुमार व कर्पूरी ठाकुर, तीसरी पारी में डा. जगन्नाथ मिश्र, दूसरी पारी में लालू प्रसाद व तीनों बार में राबड़ी देवी भी पांच वर्ष तक नहीं रही सत्ता में

क्या कहें, एक महीना भी नहीं रहा। नीतीश कुमार के अलावा श्रीकृष्ण सिंह, लालू प्रसाद और राबड़ी देवी को ही लंबे समय तक गद्दी नसीब हुई। बिहार केसरी श्रीकृष्ण सिंह के निधन के बाद एक फरवरी को दीप नारायण सिंह ने सत्ता संभाली। वे 17 फरवरी तक मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद बिनोदानंद झा ने 18 फरवरी 1961 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। दो वर्ष 227 दिन के बाद वे भी चलते बने। दो अक्टूबर 1963 को केबी सहाय ने बागडोर संभाली। चले मात्र तीन वर्ष 154 दिन ही। पहली गैर-कांग्रेसी सरकार के मुख्यमंत्री महामाया प्रसाद सिंह थे। उन्होंने पांच मार्च, 1967 को शपथ ली थी। मात्र 10 महीने 23 दिन ही कुर्सी पर टिक पाए। सतीश प्रसाद सिंह ने सबसे कम दिनों (मात्र चार दिन) तक मुख्यमंत्री रहकर निभाया। शर्त के अनुसार, बीपी मंडल मुख्यमंत्री तो बने, लेकिन मात्र एक माह एक दिन ही कुर्सी पर रह पाए।

कर्पूरी को छोड़ दूसरा उप मुख्यमंत्री नहीं पा सका उनसे बड़ी कुर्सी

राज्य स्मरी जागरण • पटना : बिहार के राजनीतिक इतिहास में दलों ने दस उप मुख्यमंत्री बनाए, लेकिन कर्पूरी ठाकुर को छोड़ इनमें से कोई दूसरा मुख्यमंत्री की कुर्सी तक नहीं पहुंच पाया। रोचक रिकार्ड यह है कि सर्वाधिक सात उप मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के राज में बने। यह रिकार्ड वर्ष 1957 के उपरांत का है।

बिहार में उप मुख्यमंत्री का पद पहली बार 1957 में अस्तित्व में आया था। तब श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व वाली सरकार में सत्ता संतुलन बनाए रखने के लिए अनुग्रह नारायण सिन्हा को उप मुख्यमंत्री की कुर्सी दी गई थी। उसके बाद कई बड़े नेताओं ने उप मुख्यमंत्री का पद संभाला। इनमें अनुग्रह नारायण सिंह, कर्पूरी ठाकुर, जगदेव प्रसाद, राम जयपाल सिंह यादव, सुशील कुमार मोदी, तेजस्वी यादव, तारकिशोर प्रसाद, रेणु देवी, सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार की राजनीति में सत्ता प्रायः मुख्यमंत्री के इर्द-गिर्द ही केंद्रित रही है। उप

कर्पूरी ठाकुर (फाइल फोटो)

मुख्यमंत्री का पद यहां सत्ता-संतुलन और जातीय-समीकरण को साधने का माध्यम अधिक रहा है, नहीं कि उनराधिकारी तैयार करने का मंच। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में भी स्थिति कुछ बदली हुई नहीं दिखती। 2025 के विधानसभा चुनाव के पहले राजनीतिक समीकरणों में जबरदस्त हलचल है, लेकिन अभी तक तेजस्वी को छोड़कर ऐसा कोई उप मुख्यमंत्री नहीं दिखता, जिसे दल के भीतर भी मुख्यमंत्री पद का चेहरा कहा जा सके। देखना है कि बिहार की राजनीति में यह परंपरा टूटेगी या कायम रहेगी।

अब तक बने उप मुख्यमंत्री

सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा, तारकिशोर प्रसाद, रेणु देवी, सुशील मोदी, तेजस्वी यादव, राम जयपाल सिंह यादव, जगदेव प्रसाद, कर्पूरी ठाकुर, अनुग्रह नारायण सिन्हा।

सर्वाधिक लंबा रहा सुशील मोदी का कार्यकाल : उप मुख्यमंत्री के रूप में सर्वाधिक लंबा कार्यकाल सुशील कुमार मोदी का रहा। मोदी 24 नवंबर, 2005 से 16 जून, 2013 तक उप मुख्यमंत्री रहे। इससे पहले यह रिकार्ड अनुग्रह नारायण सिंह के नाम था।

सुशील कुमार मोदी (फाइल फोटो)

महामाया प्रसाद सिन्हा की सरकार में 1967 में कर्पूरी ठाकुर उप मुख्यमंत्री बनाए गए। वहीं, 1970 में सतीश प्रसाद सिंह मुख्यमंत्री बने, तो उनकी सरकार में जगदेव प्रसाद को उप मुख्यमंत्री बनाया गया था। उनके बाद भोला पासवान शास्त्री की सरकार में राम जयपाल सिंह यादव को यह दायित्व मिला था।

Dainik Jagaran Page No-2

बाल दिवस का मकसद अब तक अधूरा

आज (14 नवंबर) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिवस है। यह दिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। पंडित नेहरू ने बच्चों के लिए कहा था, 'आज के बच्चे कल के भारत का निर्माण करेंगे। हम जिस तरह से बच्चों की परवरिश करते हैं, उससे भारत का भविष्य तय होता है।' मगर क्या हम नेहरू जी की इन बातों का असल अर्थ समझ सके हैं? स्थिति यह है कि एक तरफ देश बाल दिवस मनाता है, तो दूसरी तरफ गरीबी की मार झेल रहे बच्चे पेट भरने के लिए कड़ी मशक्कत करने को मजबूर होते हैं। यह देश के लिए शर्मनाक तस्वीर है।

गरीबी ही नहीं, कुपोषण के मामले में भी आज भारत की अच्छी स्थिति नहीं है। हर गरीब इंसान अपने बच्चों के भविष्य के सुनहरे सपने देखता है, लेकिन मजबूरी के कारण उसके सपने चकनाचूर हो जाते हैं। वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता। क्या किसी सरकार ने गरीब बच्चों के बारे में गंभीरता से यह सोचा है कि उनके सपने को कैसे पूरा किया जाए? कुछ बच्चे तो पढ़ाई-लिखाई भी करना चाहते हैं, पर पेट भरने के लिए उन्हें पहले मजदूरी करने को बाध्य होना पड़ता है। कहने के लिए मुफ्त शिक्षा की संकल्पना देश में की गई है। कई तरह की योजनाएं भी चलाई जा रही हैं। इसके पीछे सोच यही थी कि हर बच्चा साक्षर बनेगा। मगर शायद इन योजनाओं को भ्रष्टाचार का ग्रहण लगा हुआ है, जिसके कारण जरूरतमंदों को इनका लाभ नहीं मिल पाता। क्या आज कोई ऐसा है, जो इन बच्चों के दुख-दर्द को समझ सके? मेरा तो यही मानना है कि इन बच्चों की मानसिकता समझे बिना बाल दिवस मनाने का कोई औचित्य नहीं है। जब तक गरीब से गरीब बच्चा भी पढ़ेगा-लिखेगा नहीं या तीनों वक्त भरपेट भोजन नहीं कर पाएगा, तब तक हर बाल दिवस हमें सामाजिक विसंगति की याद ही दिलाता रहेगा।

जरूरी यही है कि भावी पीढ़ी को आदर्श नागरिक बनाने के गंभीर प्रयास किए जाएं। विद्यार्थियों को कुछ ऐसा पढ़ाया जाए कि वे अच्छे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर या अन्य विशेषज्ञ व अफसर बनने के साथ एक आदर्श नागरिक बनें। देश में गलत काम के होने और बढ़ने का एक कारण यह भी है कि शुरू से ही बच्चों को नैतिक ज्ञान नहीं मिल पाता। इसी के साथ स्थानीय इतिहास, परंपरा, रीति-रिवाजों और अपने राज्य के बारे भी उनको पता होना चाहिए, ताकि उनका भविष्य अच्छा बन सके। यही कारण है कि बाल दिवस को सार्थक तरीके से मनाना चाहिए। वक्त की यही जरूरत है।

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

बाल दिवस

हमारे देश की सफलता बच्चों पर निर्भर

बच्चों के कल्याण के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरू कितने प्रतिबद्ध थे, उसी का सम्मान करने के लिए दिन है बाल दिवस। इसी दिन पंडित नेहरू का जन्म हुआ था। यह दिन हमें बच्चों की बेहतरी की याद दिलाता है। यह बताता है कि उनकी शिक्षा, पालन-पोषण और सुरक्षित वातावरण के लिए और क्या किया जाना चाहिए। बच्चे राष्ट्र की संपत्ति होते हैं और अपनी संपत्ति को हर कोई संभालकर रखना चाहता है। यहां तक कि उसे और समृद्ध बनाना चाहता है। हम भी आजाद नागरिक के तौर पर अपने भविष्य को, यानी बच्चों को समृद्ध बनाना चाहते हैं। जाहिर है, यह समृद्धि उसे ज्ञान से, पोषण से और सुरक्षित वातावरण से मिल सकती है। यही कारण है कि यह दिन कमियां गिनाने का नहीं, बल्कि समाज को बेहतर बनाने के संकल्प का होना चाहिए।

वास्तव में, भारत में बच्चों की बेहतरी के लिए कई काम हुए हैं। उनके लिए शिक्षा की अच्छी व्यवस्था की गई है, जिस कारण स्कूल छोड़ने की दर कम हुई है। विशेष तौर पर माध्यमिक स्तर तक शत-प्रतिशत नामांकन की ओर हम बढ़ चुके हैं और यहां से स्कूल छोड़ने की दरें भी काफी कम हो गई हैं। लड़कियों के लिए लैंगिक समानता में स्थिति अच्छी हुई है और लड़कियों के नामांकन व भागीदारी में वृद्धि हुई है। इतना ही नहीं, टीकाकरण की दिशा में भी देश ने अच्छा काम किया है। टीकाकरण कवरेज में सुधार हुआ है, हालांकि इसमें अब भी काम करने की जरूरत है, जिस पर हमें ध्यान देना होगा। देश की आर्थिक तरक्की से भी बच्चों का जीवन सुधरा है। देखा जाए, तो आर्थिक विकास ने बच्चों के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण आदि की सुविधा उपलब्ध कराई है। इसी का परिणाम है कि बाल श्रम अब काफी कम हो चुका है और हिंसा जैसी समस्याओं से निपटने के लिए कई प्रभावशाली प्रयास किए गए हैं।

पंडित नेहरू का मानना था कि देश की सफलता और समृद्धि बच्चों पर निर्भर है, जो आज भी प्रासंगिक है। बच्चों के विकास के बिना राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता। अच्छी बात है कि तमाम सरकारें इस बात से सहमत हैं और बच्चों की बेहतरी के लिए अनवरत काम कर रही हैं। यह प्रवृत्ति आगे भी बनी रहेगी, और ऐसा तभी होगा, जब हम सरकारों के साथ मिलकर काम करेंगे, न कि उनकी आलोचना में रम जाएंगे। अगर हम चाहते हैं कि यह देश बच्चों के लिए और बेहतर बने, तो हमें सभी तबकों के बच्चों को समान रूप से आगे बढ़ाना होगा, खासतौर से वंचित और कमजोर तबके के बच्चों पर ध्यान देना होगा।

शोभित कुमार, टिप्पणीकार

Hindustan Page No-13

बधाई नेहरूजी

आज नेहरूजी का जन्म-दिवस है। वह अपने यशस्वी जीवन के 61 वर्ष समाप्त करके 62वें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। आज नेहरूजी से अधिक काम के बोझ से दबा हुआ व्यक्ति शायद ही दूसरा कोई होगा।

देश और विदेश की तरह-तरह की समस्यायें उन्हें आज परेशान कर रही हैं। किन्तु नेहरूजी उस मिट्टी के बने हुए नहीं जो कठिनाइयों को देखकर घबरा जायें। जीवन में उन्होंने कठिनाइयों का मर्दानगी के साथ मुकाबला किया है और वर्ष बीतते जाते हैं और उनकी मर्दानगी और भी अधिक निखरती जा रही है। वह आदर्श प्रिय हैं। उनकी निगाह ऊंची उठती है, नीचे झुकना नहीं जानती। वह जिसे गलत समझते हैं, उसे गलत कहने से नहीं झिझकते। अन्याय और बुराई का मुकाबला करने का उनका साहस पूर्ववत् कायम है। अवश्य ही पद की जिम्मेदारियों ने उनके हाथ-पांव जकड़ दिये हैं, किन्तु वे उन्मुक्त आकाश में विहार करने को तड़पते रहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय आकाश में तीसरे महायुद्ध की घटायें घिर रही हैं। नेहरूजी, जिनके हाथों में राष्ट्र की बागडोर है। राष्ट्र नौका को सभी झंझावातों के बीच सकुशल खेवे जाने का प्रयास कर रहे हैं। न केवल भारत को, बल्कि सारे विश्व को आज नेहरूजी जैसे आदर्शवादी राजनीतिज्ञ की आवश्यकता है। गांधीजी के राजनीतिक उत्तराधिकारी होने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ है और वह उनके शांति और प्रेम के आदर्शों को अपनी शक्ति भर दुनिया में फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। विश्व में उन्होंने भारत का सिर ऊंचा किया है और देश के हर स्त्री-पुरुष और बच्चे को उन पर गर्व है। हमारी कामना है कि भगवान नेहरूजी को दीर्घायु प्रदान करे, ताकि वह देश और विश्व की अधिक से अधिक सेवा कर सकें। उनके शुभ जन्म-दिवस पर हमारी हार्दिक बधाई।

जवाहरलाल के व्यक्तित्व के भिन्न- भिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालना किसी भी छोटे से लेख में संभव नहीं। देश या विदेश में प्रायः सभी लोग उनको एक महान् राजनीतिक नेता के रूप में देखते हैं। दार्शनिक और लेखक के रूप में भी उनकी ख्याति कम नहीं है, लेकिन आर्थिक समस्या को सुलझाने में जो कुछ उन्होंने प्रयत्न किया है, उसकी तरफ लोगों का ध्यान पर्याप्त रूप में आकर्षित नहीं हुआ।

Hindustan Page No-10